ISBN : 978-93-93667-50-2

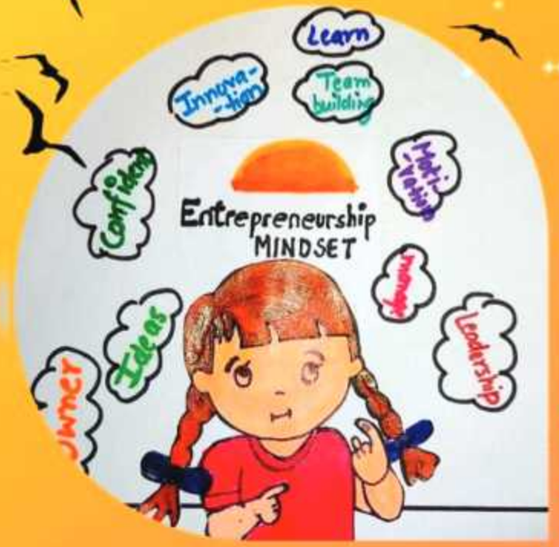

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्,
वरूण मार्ग डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली 110024

Mega PTM Teachers Manual

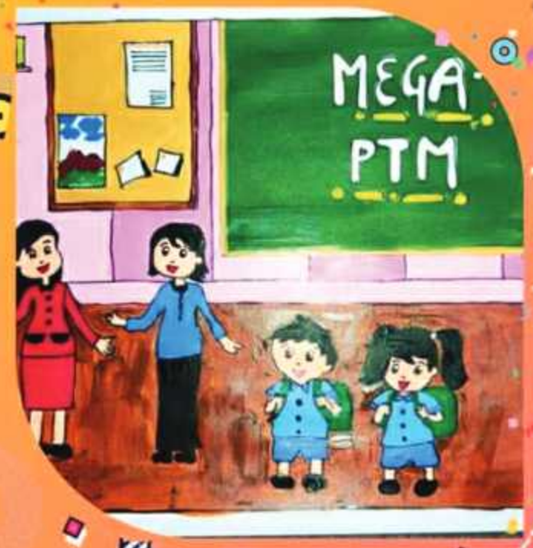

State Council of Educational Research & Training
Varun Marg Defence Colony, New Delhi - 110024

MEGA PTM
TEACHERS MANUAL

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
वरूण मार्ग डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली 110024

ISBN : 978-93-93667-50-2

मेगा पी.टी.एम. टीचर्स मैनुअल

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् दिल्ली

11,000 (प्रतियाँ)

फरवरी, 2022

प्रकाशन अधिकारी : डॉ. मुकेश यादव, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

प्रकाशन दल : राधा, नवीन कुमार

प्रकाशित : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

मुद्रित : राज प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, गाजियाबाद

सलाहकार

श्री एच. राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा), जी.एन.सी.टी, दिल्ली

श्री हिमांशु गुप्ता, शिक्षा निदेशक, जी.एन.सी.टी, दिल्ली

श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

डॉ राजेश कुमार, प्राचार्य, डाइट घुमनहेरा, दिल्ली

निर्माण समिति सदस्य एवं संपादक

डॉ. चित्ररेखा, सहायक प्रोफेसर, डाइट घुमनहेरा

डॉ. मीना सहरावत, सहायक प्रोफेसर, डाइट घुमनहेरा

डॉ. एम. एम. रॉय, सहायक प्रोफेसर, डाइट घुमनहेरा

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

सत्यमेव जयते

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली–110002
Email. msisodia.delhi@gov.in

D.O. No. : 04·CM/2022/320
Date : 25/02/22

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

एक शिक्षक जहाँ सीखने को मजेदार व उद्देश्यपूर्ण बनाता है, बच्चों के दृष्टिकोण को एक नया रूप देता है और बच्चों में आत्मविश्वास का निर्माण कर उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। वहीं माता–पिता अपने बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए निरंतर देखभाल, स्नेह, पोषण, मार्गदर्शन, शिक्षा और स्वस्थ वातावरण प्रदान करते हैं। बच्चे के विकास के लिए माता–पिता और शिक्षक दोनों की ही भूमिका अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षक और माता–पिता दोनों मिलकर एक साथ बच्चे के विकास के लिए सहमति से काम करें तो बच्चों की स्कूली शिक्षा में अपेक्षित सुधार व विकास किया जा सकता है।

माता पिता को बच्चे की स्कूली शिक्षा में शामिल करने के लिए दिल्ली सरकार द्वारा चलाई जा रही मेगा पी.टी.एम. की एक अहम भूमिका रही है। मेगा पी.टी.एम. का एक मुख्य मकसद रहा है कि माता–पिता, शिक्षक और बच्चों को एक साथ एक मंच पर लाकर उनमें बच्चों के विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर आपसी सहमति विकसित कर, एक सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करना। इसलिए यह जरूरी है कि हमारे शिक्षक सबसे पहले अपनी तरफ से पहल करें और मेगा पी.टी.एम. के द्वारा अपने अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक बनाएं।

यह मैनुअल मेगा पी.टी.एम. से पहले, मेगा पी.टी.एम. के दौरान और मेगा पी.टी.एम. के बाद शिक्षकों को अपने दायित्वों को समझने और अभिभावकों को स्कूल के साथ जोड़ने में उनकी मदद करने हेतू तैयार किया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि इस मैनुअल में दिए गये कियाकलापों, केस–स्टडी व सुझावों के प्रयोगों के माध्यम से हमारे सभी शिक्षक साथी, माता–पिता और बच्चे लाभांवित होंगे और हमारे शिक्षक व माता–पिता अपने बीच की दूरियों को कम कर बच्चे के व्यक्तित्व और शिक्षा की गुणवत्ता में विकास कर पायेंगे।

शुभकामनाओं सहित

मनीष सिसोदिया

H. RAJESH PRASAD
IAS

सत्यमेव जयते

प्रधान सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

संदेश

हम सभी जानते हैं कि अभिभावक-शिक्षक का संबंध बच्चे के विकास का मूलभूत आधार है। संबंधों की घनिष्ठता अभिभावकों और शिक्षकों के बीच एक सेतु का काम करती है । शिक्षक और अभिभावक दोनों आपसी सहयोग से यह तय कर सकते हैं कि आगे ऐसे और क्या कदम उठाए जायँ जिससे एक बच्चा अपनी पढ़ाई के साथ – साथ अन्य गतिविधियों से भी अधिक से अधिक लाभ उठा पाये। स्कूली गतिविधियों में अभिभावकों की भागीदारी बच्चे की सीखने की प्रक्रिया और प्रेरणा में सबसे अधिक प्रभावशाली साबित होती है। मेगा.पी. टी. एम इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मेगा पी. टी.एम के द्वारा हम न केवल अभिभावकों के साथ एक अच्छा संबंध बनाने में कामयाब रहे बल्कि बच्चों के अधिगम में भी उनकी सहभागिता ले पाये। परन्तु कोविड 19 महामारी और अपनी अन्य कुछ मजबूरियों के कारण हमारे कुछ अभिभावक अभी भी एस दायरे में नहीं आ पायें हैं। इसलिए यह जिम्मेदारी अब हमारे शिक्षक साथियों की है की वे सभी अभिभावकों से संपर्क बनाएं|

मेरा विश्वास है कि यह मैनुअल सभी अभिभावकों और शिक्षकों को बच्चे के विकास के लिए एक साथ लाने में एक बहुत बड़ी भूमिका निभायेगा |

मैं आशा करता हूँ कि इस मैनुअल में क्रियाकलापों, केस स्टडी, सफलता के मानदंड आदि के माध्यम से दी गई समस्त जानकारी शिक्षकों और अभिभावकों को शिक्षा की गुणवत्ता में अपनी भूमिका को समझने, संवेदनशील बनाने व उसे कुशलता के साथ निभाने में न केवल कारगर साबित होगी बल्कि मेगा. पी. टी. एम. को अपने उद्देश्य तक पहुँचने में मदद भी करेगी।

एच. राजेश प्रसाद

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

संदेश

मेरे प्रिय शिक्षक साथियो!

शिक्षक माता–पिता के पश्चात् वह दूसरा व्यक्ति है जिससे बच्चे सामाजिक, व्यवहारिक और बौद्धिक कौशल सीखते हैं। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है और विभिन्न कौशलों में महारत हासिल करता है, शिक्षक और माता–पिता उसकी रूचि को पोषित करने और उसे अधिक स्वतंत्र ढंग से सीखने में मार्गदर्शन करते हैं।

मेगा पी.टी.एम. जहां एक ओर बच्चों के नियमित अवलोकन व आकलन के माध्यम से उनकी शैक्षणिक प्रगति के बारे में माता–पिता को अवगत कराने में मदद करती है, वहीं दूसरी ओर यह माता–पिता को विद्यालय की अन्य पाठ्यसहगामी गतिविधियों में बच्चे की भागीदारी के बारे में शिक्षक के साथ ठीक से संवाद और समन्वय करने में भी मदद करती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मेगा पी.टी.एम. के माध्यम से शिक्षक विद्यालय और माता–पिता के संबंधों में और अधिक मजबूती लाने का प्रयास करें जिससे माता–पिता शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक अपनी सहभागिता निभा सकें।

मेरा विश्वास है कि इस मैनुअल में विस्तार से समझाई गई मेगा पी.टी.एम. से पहले और बाद में की जाने वाली गतिविधियाँ तथा मेगा पी.टी.एम. के दौरान दी गई केस स्टडी इत्यादि हमारे सभी शिक्षक साथियों व अभिभावकों को अपने–अपने दायित्वों को अधिक कुशलता के साथ समझने व निभाने में मदद करेगी।

सधन्यवाद।

(हिमांशु गुप्ता)
निदेशक (शिक्षा)

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel. : +91-11-24331356, Fax: +91-11-24332426
E-mail: dir12scert@gmail.com

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

Date : 22/2/22

D.O. No. F.1(2)/Dir/Corr/SCERT/386

संदेश

मेगा पी.टी.एम.माता-पिता-शिक्षक संबंधों के माध्यम से सभी बच्चों की अधिगम क्षमताओं में सुधार का अवसर प्रदान करने का एक बहुत बढ़िया एवं सराहनीय प्रयास है|माता- पिता और स्कूल शिक्षक दोनों मिलकर बच्चे के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं|यह एक सामान्य अवलोकन है कि अक्सर माता-पिता स्कूलों द्वारा आयोजित पी. टी. एम में शामिल नहीं होते हैं जिसके कारण माता- पिता और स्कूल के शिक्षकों के बीच मानसिक व सामाजिक दूरी बढ़ती है|

मेगा पी. टी. एम. के माध्यम से जहां हम एक ओर माता- पिता को स्कूल तक लाने में कामयाब रहे हैं वहीं दूसरी ओर हम, हमारे बच्चों के अधिगम के क्षेत्र में भी बढ़ोतरी कर पायें हैं, यह बात डाईट/एस. सी. ई. आर. टी. द्वारा किए गए शोध द्वारा प्रमाणित हैं | शोध से यह बात भी मुख्य रूप से निकाल कर आई कि अभी भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां हमें और हमारे शिक्षकों को और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है | वे क्षेत्र हैं अभिभावकों को अपने दायित्वों के लिए और अधिक जागरूक करना, उन्हें स्कूल से जोड़ना और विभिन्न गतिविधियों में उनका सहयोग ले उन्हें स्कूल के साथ लगातार बनाए रखना इस मैनुअल इन क्षेत्रों की पहचान के बाद, विश्लेषण कर उन पर काम करने का प्रयास किया गया है|

बच्चों को पढ़ाने के अतिरिक्त आज हमारे शिक्षक से बहुत ज्यादा अपेक्षाएं हैं कि वे अपने अभिभावकों से लगातार संपर्क बनाएं और उन्हें यह समझाने का प्रयास करें कि वे दोनों मिलकर स्कूल की योजनाओं और शैक्षिक नीतियों के द्वारा बच्चे के समग्र विकास में सुधार ला सकते हैं| यह मैनुअल हमारे शिक्षक साथियों के लिए तैयार किया गया है| मैनुअल में दिए गए मेगा पी. टी. एम. के तीन फेज और प्रत्येक फेज में शामिल गतिविधियां, केस स्टडी, मेगा पी. टी.एम की सफलता के मानदंड की जाँच सूची, शिक्षकों को न केवल अपनी भूमिका, व्यवहार कौशल को बढ़ाने व जाँचने में मदद करेंगी बल्कि बच्चों के माता- पिता को जानने, समझने में भी मदद करेंगी जिसके द्वारा हमारे शिक्षक माता-पिता के साथ अच्छे संबंध बनाकर उन्हें लगातार अपने स्कूल के साथ जोड़ने में कामयाब हो सकेंगे ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है|

मैं आशा करता हूं की यह मैनुअल मेगा पी. टी. एम. को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने और इसे अधिक सफल बनाने में हमारे लिए लाभकारी साबित होगा |

रजनीश सिंह

आभार

मेगा. पी. टी. एम. शिक्षकों और अभिभावकों को बच्चे की प्रगति के लिए एक साथ लाने का एक महत्वपूर्ण कदम है। मेगा पी. टी. एम. के संचालन में शिक्षक अपने दायित्व व जिम्मेदारी को और अधिक कुशलता के साथ निभा सकें, इसे ध्यान में रखते हुए यह मेगा पी. टी. एम. शिक्षक मैनुअल तैयार किया गया है। यह मैनुअल डाइट / एस. सी. आर. टी. द्वारा किए गए शोध से आए परिणामों के आधार पर विशेषज्ञों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षकों आदि के साथ गहन चिंतन और विचार-विमर्श के बाद तैयार किया गया है। यह मैनुअल न केवल शिक्षकों के लिए लाभप्रद साबित होगा बल्कि अभिभावकों को विद्यालय के साथ जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । इस मैनुअल के सफलता पूर्वक पूरा होने पर यह परिषद उन सभी सदस्यों को अपना धन्यवाद प्रेषित करना चाहती है जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस मैनुअल को पूरा करने में हमारा सहयोग दिया है।

परिषद, सर्वप्रथम शैलेन्द्र शर्मा, शैक्षिक मुख्य सलाहकार, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार को उनके द्वारा किए गए मार्गदर्शन और प्रेरणा के लिए हृदय से धन्यवाद देती है जिन्होंने इस मैनुअल की गुणवत्ता को बढ़ाने में हमारा पूरा सहयोग दिया।

परिषद, डॉ रीतिका डबास सीनियर लेक्चरर एस.सी.ई.आर.टी दिल्ली; मनोज कुमार, शिक्षक सामाजिक विज्ञान, गवर्नमेंट बॉयज सीनियर सेकन्डेरी स्कूल मोती बाग वन, दिल्ली; का भी आभार व्यक्त करती है जिन्होंने इस मैनुअल में दिए गये क्रियाकलापों व गतिविधियों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया के साथ-साथ अपने महत्वपूर्ण सुझाव हमें दिए।

परिषद्, सारांश वासवानी, उर्वशी, गैर सरकारी संगठन, साझा; रूपक चौहान, रूम टू रीड ट्रस्ट; इन सभी का इस मैनुअल की विभिन्न गतिविधियों के विश्लेषण के दौरान हमसे अपने सुझाव साझा करने पर हृदय से उनका आभार व्यक्त करती है।

परिषद, डॉ शोएब अब्दुल्लाह, प्रोफेसर, जामिया मिलिया इस्लामिया; डॉ विजियन के. सहायक प्रोफेसर एन. सी. ई. आर. टी; डॉ दिनेश कुमार पूर्व प्रधानाचार्य डाइट घुमनहेरा का भी शोध में सहायता करने और शोध से आए परिणामों का विश्लेषण करने के साथ - साथ दिल्ली सरकार के उन सभी स्कूलों के प्रधानाध्यापकों, सलाहकारों, मेंटर शिक्षकों, अभिभावकों, बच्चों और अन्य हितधारकों का भी आभार व्यक्त करती हैं, जिन्होंने शोध अध्ययन में हमारी मदद की और इस मैनुअल के निर्माण का आधार प्रदान किया ।

डॉ. नाहर सिंह

संयुक्त निदेशक (शैक्षिक), एस.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

संपादक की कलम से

बच्चे के शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक व उसके समग्र विकास के लिए माता-पिता और शिक्षक दोनों ही जिम्मेदार हैं। स्कूल में माता-पिता की बढ़ी हुई भागीदारी, उनकी जवाबदेही और शिक्षक-अभिभावकों के बीच पारदर्शिता से बच्चे के अधिगम के स्तर में मनोवांछित सुधार व विकास किया जा सकता है। माता-पिता और शिक्षक के बीच प्रभावी ढंग से संवाद और एक साथ काम करने से हमारे बच्चे की सफलता का मार्ग सुनिश्चित होता है।

शिक्षा की गुणवत्ता में अभिभावकों की भागीदारी के महत्व को समझते हुए **शिक्षा के अधिकार अधिनियम** (Right to Education Act 2009) के अंतर्गत स्कूलों में एस. एम. सी. के गठन के द्वारा अभिभावकों को स्कूल की गतिविधियों में को प्राथमिकता देने की बात की गई और कहा गया की सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और विशेष श्रेणी के स्कूलों को शिक्षा के अधिकार अधिनियम (Right to Education Act 2009) की धारा 21 के अनुसार स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एस. एम. सी.) का गठन करना होगा।

इसी सोच को एक नई दिशा देने के लिए दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में वर्ष 2016 से मेगा पी. टी. एम. का आयोजन प्रति वर्ष किया जा रहा है जिससे बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी को अधिक से अधिक बढ़ाया जा सके। मेगा पी. टी. एम. स्कूल की विभिन्न गतिविधियों में स्कूल प्रबंधन समितियों अभिभावक शिक्षक संघों, स्कूल मित्रों आदि के माध्यम से अभिभावकों को स्कूल से जोड़ने पर बल देता है। अभी भी हमारे बहुत से अभिभावक काम की व्यस्तता के कारण, वेतन कटने के डर के कारण, कम पढ़े लिखे होने के कारण या अन्य किन्हीं कारणों से मेगा पी.टी.एम. में भाग नहीं ले पाते और लेते भी हैं तो एक लंबे समय के साथ शिक्षकों से जुड़ नहीं पाते। ऐसे अभिभावकों को स्कूल तक लाना और उन्हें जोड़ें रखना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है।

कई बार यह भी देखा जाता है कि हमारे शिक्षक मेगा पी.टी.एम. के दौरान एक संप्रेषक की भूमिका के रूप में कार्य करते हैं और अपने अन्य दायित्वों को समय बचाने या जल्दबाज़ी के कारण भूल जाते हैं। यह मैनुअल शिक्षकों को मेगा पी.टी.एम. के समय अपने अन्य दायित्वों को याद रखने और उन्हें कुशलता के साथ निभाने में मदद करता है।

इस मैनुअल का उद्देश्य हमारे शिक्षकों को अपने अभिभावकों से जोड़ने में न केवल उनकी मदद करना है बल्कि अभिभावकों को स्कूल के साथ लंबे समय तक बनाए रखने में उनकी सहायता करना भी है। यह मैनुअल बड़ी ही सरल भाषा में तैयार किया गया है और विभिन्न केस स्टडी और गतिविधियों के माध्यम से इसके द्वारा शिक्षकों की समझ को उन्नत करने का प्रयास किया गया है।

मैनुअल में मेगा. पी. टी. एम. की तीन फेज दिए गए हैं। प्रत्येक फेज के अपने निर्धारित उद्देश्य हैं। मेगा. पी. टी. एम. का प्रत्येक फेज तीन आयामों में विभक्त है (1) जागरूकता, (2) जुड़ाव एवं संलग्नता और (3) कायम रखना। प्रत्येक फेज के साथ स्कूल मित्रों की भूमिका का वर्णन किया गया है।

मेगा पी. टी. एम. फेज-1 में उन गतिविधियों व केस स्टडी को शामिल किया गया है जिसके माध्यम से हमारे शिक्षक अपने अभिभावकों को मेगा पी.टी.एम. के उद्देश्यों व सरकारी शैक्षिक योजनाओं से जागरूक कराने के साथ-साथ उनसे अपने संपर्क के लिए किए गए प्रयासों का रिकार्ड रख सकें। अच्छे संबंध बनाने के लिए एक शिक्षक के अंदर व्यवहार कौशलों

का होना अत्यंत आवश्यक है। इस मैनुअल के माध्यम से शिक्षक अपने अभिभावकों के साथ किए गए अपने व्यवहार कौशल की जाँच कर सकते हैं और अपने व्यवहार कौशल का आकलन कर उसमें अपेक्षित सुधार कर सकते हैं।

मेगा पी.टी.एम. फेज-2 शिक्षकों से यह अपेक्षा करता है कि वे अपने अभिभावकों को मैनुअल में दी गई गतिविधियों के माध्यम से उन्हें अपने बच्चे की शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक या मनोवैज्ञानिक आदि सभी प्रकार की आवश्यकताओं व उनके अधिगम स्तर को समझाने व उनके प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास करें। हमारे अधिकांश अभिभावक कम पढ़े लिखे या निरक्षर होने के कारण जानकारी के अभाव में अधिकतर अपने बच्चों की जरूरतों को समझ नहीं पाते और कई बार हमें घातक इसके परिणाम देखने को मिलते हैं। हमारे शिक्षक इस बात स्वयं भी समझें बल्कि माता- पिता को भी यह समझाने का प्रयास करें की हर बच्चा एक दूसरे से भिन्न है। उसकी अपनी विशिष्ट क्षमताएँ, योग्यताएं व रुचि आदि हैं जो उसे दूसरे से अलग बनाती हैं। प्रत्येक बच्चे की जरूरतें एक दूसरे से भिन्न हो सकती हैं।

शिक्षक अभिभावकों से अच्छा संबंध बनाने के लिए शिक्षक के व्यवहार कौशल के साथ यह भी जरूरी है की हमारे शिक्षक अपने अभिभावकों की अधिकांश जानकारी अपने पास रखें और उनका पूरा परिचय जानने का प्रयास करें जिससे उन्हें उनकी योग्यता, शैक्षिक स्तर , कौशल और रूची के अनुसार विभिन्न विद्यालयी गतिविधियों में उनकी सहमति के अनुसार उन्हें शामिल किया जा सके बल्कि आवश्यकतानुसार उनकी मदद भी की जा सके। **हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** के बिन्दु 21 में प्रौढ़ शिक्षा पर मुख्य रूप से बल दिया गया है और उसमें विद्यालयों और शिक्षकों को एक अहम भूमिका निभाने के लिए कहा गया है। मेगा पी. टी. एम. के माध्यम हम अपने अभिभावकों के शैक्षिक स्तर को जानकर न केवल कम पढ़े लिखे व अनपढ़ अभिभावकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था कर सकते हैं बल्कि विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें रोजगार दिलाने व चुनने में भी सहायता कर सकते हैं।

मेगा पी.टी.एम. फेज- 3 शिक्षकों से यह अपेक्षा करता है कि वे फेज 2 में अभिभावकों को बच्चों की आवश्यकताओं से जागरूक कराने के बाद अभिभावकों को अपने बच्चे के प्रति उनके द्वारा किए जाने वाले व्यवहार की अहमियत से जागरूक कराएं। केस स्टडी के माध्यम से यह समझाने का प्रयास करें की अभिभावक बच्चे के साथ कैसा व्यवहार करें और उनके लिए ऐसा करना क्यों जरूरी है ? वे अपने बच्चे के तुलना अन्य बच्चों के साथ न करें। उसे समझने का प्रयास करें। ऐसा न करने से मनोवैज्ञानिक रूप से बच्चे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों से भी यह अपेक्षा की जाती है की वे अपने अभिभावकों को विद्यालय की विभिन्न कमेटियों का हिस्सा बनाएं और अभिभावों के साथ एक लंबा और मजबूत संबंध बनाने के लिए अभिभावकों की समस्याओं को भी न केवल समझने प्रयास करें बल्कि उन्हें सहयोग भी दें ।

मैनुअल के अंत में मेगा पी.टी.एम. को सफल बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव और सफलता के मानदंड दिए गए हैं जिनके आधार पर शिक्षक मेगा पी टी एम को सफल बनाने के लिए उसके द्वारा किए गए प्रयासों को जाँच सकता है और और उसके आधार पर भविष्य के लिए निर्णय ले सकता है।

इस मैनुअल में दी गई गतिविधियां, सुझाव हमारे शिक्षकों को किसी सीमा में बांधने का प्रयास नहीं करती बल्कि ये उन्हें मेगा पी.टी.एम. को सफल बनाने की दिशा में और उत्साह के साथ स्वतंत्र रूप से कार्य करने को प्रेरित करती हैं।

विषय-सूची

क्रमांक	विषय वस्तु	पेज नं
1	मैनुअल के उद्देश्य	01
2	मेगा पी.टी.एम. फेज-1	03
3	मेगा पी.टी.एम. फेज-2	11
4	मेगा पी.टी.एम. फेज-3	18
5	Annexure -1 मेगा पी. टी. एम. के उद्देश्य एवं केंद्रित मुख्य मुद्दे	25
6	Annexure -2 मैनुअल की आवश्यकता	27
7	Annexure -3 एस. एम. सी. का आउटरीच प्रोग्राम एवं स्कूल मित्र	29
8	Annexure -4 हमारे प्रयास	30
9	Annexure -5 अन्य सुझाव	32
10	Annexure -6 मेगा पी. टी. एम. की सफलता के मानदंड -जाँच सूची	35

पृष्ठभूमि

माता-पिता और शिक्षक के बीच विश्वास, आपसी समझ और सौहार्दपूर्ण संबंध बच्चे की खुशहाल शिक्षा का एक बड़ा रहस्य है। माता-पिता से शिक्षक के प्रति नियमित समर्थन, मार्गदर्शन और सहयोग बच्चे को जोड़ने, समझने और काम करने में बहुत मदद करता है। एक बच्चे में उल्लेखनीय और अविश्वसनीय सकारात्मक परिवर्तन देखा जाता है यदि माता-पिता और शिक्षक एक साथ काम करते हैं। एक अच्छा अभिभावक शिक्षक संबंध बच्चे को स्कूल जाने के प्रति सकारात्मक बनाता है।

अभिभावक-शिक्षक बैठकें स्कूलों और अभिभावकों के बीच की खाई को पाटती हैं। स्कूल के मुद्दों में माता-पिता की भागीदारी न केवल सभी विषय क्षेत्रों में छात्र अधिगम के गति को बढ़ाती है, बल्कि यह बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (रोलांडे डेसलैंड्स, 2009)।

स्कूली शिक्षा में माता-पिता की सकारात्मक भागीदारी को बढ़ाने के लिये और माता-पिता और शिक्षकों के बीच सकारात्मक और अच्छे संबंध बनाने के लिए दिल्ली निदेशालय के सभी सरकारी स्कूलों में प्रथम मेगा अभिभावक शिक्षक बैठक (एम.पी.टी.एम.), 30 जुलाई 2016 को आयोजन किया गया। इस मेगा पी.टी.एम. की सबसे मुख्य विशेषता यह थी कि यह इतने बड़े स्तर पर पहली बार एक ही तारीख और एक ही दिन सभी स्कूलों में एक साथ आयोजित की गई और दिल्ली शिक्षा निदेशालय के लगभग एक हजार से अधिक सरकारी स्कूलों ने इसे आयोजित किया। 2016 से मेगा पी.टी. एम प्रत्येक वर्ष में दो से तीन बार आयोजित की जाती है। इस मेगा पी.टी.एम. को आयोजित करने का मुख्य प्रमुख उद्देश्य माता- पिता और शिक्षकों के बीच पाए जाने वाले संचार व समय अंतराल को पाटना अर्थात कम करना और माता-पिता और शिक्षकों के बीच एक मजबूत संबंध विकसित करना है। मेगा पी.टी.एम. न केवल शिक्षकों और माता-पिता के बीच एक बंधन बनाने में, बल्कि ये एक सकारात्मक संवाद शुरू करने में भी मदद करती हैं और माता-पिता को एक अवसर देती हैं ताकि वे सरकार द्वारा की जा रही कई पहलों का हिस्सा बनने पर गर्व महसूस करें। मेगा पी. टी. एम से जुड़े अन्य उद्देश्य और आयोजित की गई विभिन्न मेगा पेरेंट्स टीचर मीटिंग में केंद्रित मुख्य मुद्दे जानने के लिये (Annexure 1, पेज नं. 25) देखें।

यह मेगा पी.टी.एम. मैनुअल मुख्य रूप से शिक्षकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को कुशलता पूर्वक निभाने पर केंद्रित है और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए स्कूल में माता-पिता की भागीदारी की माँग करता है ताकि अधिक बच्चे नामांकित हों, स्कूल में रहें और बेहतर सीखें। मैनुअल सरकार द्वारा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने के लिए बड़े पैमाने पर शिक्षकों द्वारा अभिभावकों के बीच जागरूकता व समझ पैदा करने के साथ-साथ अभिभावकों को जोड़ने व बने रहने का एक प्रयास करता है जिससे कि इसका उपयोग बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने और सुधारने के लिए किया जा सके। इस मैनुअल को पढ़ने वाले शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे संबंधों को बनाने और उन्हें कायम रखने और अपने-अपने स्कूलों की प्रगति व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में ज्ञान, समझ और कौशल का प्रदर्शन करें। यह मैनुअल मेगा पी. टी. एम. शोध से आये परिणामों के आधार पर बनाया गया है। (Annexure 2 पेज नं. 27) देखें।

मैनुअल के मुख्य उद्देश्य
(Main Objectives of Manual)

1. जागरूकता (Awareness)

अभिभावकों व बच्चों के अंदर मेगा पी.टी.एम. के उद्देश्यों व सरकारी शैक्षिक नीतियों के प्रति जागरूकता पैदा करना।

2. जुड़ाव एवं संलग्नता (Connect & Engage)

अभिभावकों को लगातार विदयालय से जोड़े रखने के लिये प्रयास करने व विद्यालयों के विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से संलग्न रखने का प्रयास करना।

3. कायम रखना (Sustain)

बिना रूकावट और बाधा के अभिभावकों को विद्यालय के साथ निरंतर बनाए रखना।

शिक्षक

- मेगा पी.टी.एम. को अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसमें दी गई गतिविधियों व सुझावों को समझने के लिए पूरे मैनुअल को अच्छी तरह से पढ़ें।
- मीटिंग शुरू करने से पहले यह सुनिश्चित करें कि क्या आप स्वयं और अभिभावक मानसिक व शारीरिक रूप से मीटिंग के लिये तैयार हैं।
- अभिभावकों से बातचीत करते समय ज्यादा औपचारिक न रहें। एक अनौपचारिक, स्वस्थ व खुशनुमा वातावरण के द्वारा अपने व्यवहारिक कौशल के द्वारा उन्हें यह एहसास दिलाने का प्रयास करें कि वे भी स्कूल का एक हिस्सा है और उनकी सहभागिता उनके बच्चे के विकास के लिये अपेक्षित है।
- पी.टी.एम. का उद्देश्य बच्चे की शिकायत या कमी बताना नहीं होता इसलिये अभिभावकों से बातचीत की शुरुआत कभी भी बच्चे की शिकायतों के साथ न करें और न ही अन्य व्यक्तियों के साथ और उनके सामने साझा करें। हमेशा बच्चे के सकारात्मक पहलुओं से चर्चा के शुरूआत करें।
- मेगा पी.टी.एम को एक वर्कशॉप के मोड़ में आयोजित करें व निम्नलिखित तीनों आयामों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पूरा करने का प्रयास करें।
- संभव हो तो मेगा पी. टी. एम. को माइंड फुलनेस क्रियाकलाप के साथ शुरू करें और सभी अभिभावकों को उसमें शामिल करने का प्रयास करें।

मेगा पी.टी.एम. फेज-1

जागरूकता-मेगा पी.टी.एम. के उद्देश्य व अन्य शैक्षिक कार्यक्रम
जुड़ाव एवं संलग्नता- अभिभावक से मेरी मुलाकात
कायम रखना-बातचीत के समय शिक्षक का व्यवहार

मेगा पी.टी.एम. फेज-2

जागरूकता-हमारे बच्चे की आवश्यकताएँ
जुड़ाव एवं संलग्नता- हमारे अभिभावक (परिचय)
कायम रखना-हमारे अभिभावकों की भागीदारी

मेगा पी.टी.एम. फेज-3

जागरूकता-हमारे (शिक्षक-अभिभावक) प्रयास
जुड़ाव एवं संलग्नता- साझेदारी व भागीदारी
कायम रखना-अभिभावकों के प्रति हमारी समझ एवं दायित्व

मैनुअल निम्नलिखित तीन आयामों (Dimensions) पर केंद्रित हैं :

1. जागरूकता (Awareness)
2. जुड़ाव एवं संलग्नता (Connect & Engage)
3. कायम रखना (Sustain)

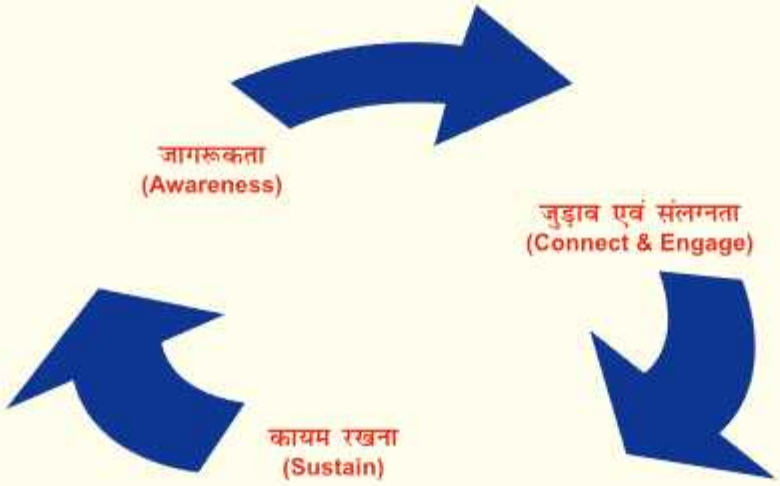

ये तीनों आयाम आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक दूसरे को आगे गति प्रदान करते हैं।

मेगा पी. टी. एम. (फेज-1)

1. जागरूकता (Awareness)

उद्देश्य:

शिक्षकों द्वारा माता-पिता को मेगा पी.टी.एम. के उद्देश्यों के बारे में अवगत कराना व समझाना।

सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली रीता ने जब घर जाकर अपनी माता को बताया कि दो दिन बाद उसके विद्यालय में मेगा पी. टी. एम. है । तब उसकी माँ ने पूछा कि यह मेगा पी.टी.एम. क्या है? पूछने पर उसने अपनी माँ को बताया कि कुछ नहीं बस मैडम उसके बारे में कुछ बातचीत करेंगी। तभी उसकी माँ को याद आया कि एक दिन राधा कि माँ भी पी. टी. एम. में गई थी और उसने उसे बताया था कि पी.टी. एम में शिक्षक बच्चों कि शिकायतें और कमियाँ बताते हैं यह सोचकर कि उसकी मैडम ने जरूर रीता की किसी शिकायत के लिये मुझे बुलाया होगा। रीता की माँ मेगा पी. टी. एम. में नहीं गई।

अभिभावकों से चर्चा करें:-

- क्या यह सोचकर रीता की मां का मेगा पी.टी.एम. में न जाना सही था?
- मेगा पी.टी.एम. या पी. टी. एम. का उद्देश्य उनके अनुसार क्या हो सकता है?
- वे मेगा पी.टी.एम. में क्या सोच कर आयें हैं कि आज क्या होगा ?
- शिक्षक स्वयं भी यह विचार करें कि मेगा पी.टी.एम. की शुरूआत किस बात से करें और चर्चा को एक सार्थक दिशा में ले जाकर अभिभावकों को मेगा पी. टी. एम. के उद्देश्यों को चार्ट आदि पर प्रदर्शित करते हुए उन्हें विभिन्न सरकारी पहलों से अवश्य अवगत करायें और उनके संकोच व उनकी सभी प्रकार गलत भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास करें।

मेगा पी. टी. एम. के प्रमुख उद्देश्य

- संचार अंतराल को कम कर समाप्त करना, सकारात्मक संवाद की पहल करना।
- माता-पिता और शिक्षकों के बीच एक मजबूत संबंध विकसित करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास में माता- पिता व शिक्षकों की भूमिका तय करना।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना व सरकार द्वारा की जा रही कई पहलों की जानकारी देने के साथ उसमें उन्हें अपनी सहभागिता देने के लिये प्रेरित करना।

बच्चों के विकास के लिये सरकारी प्रोग्राम

माइंडफुलनेस

बिजनेस ब्लास्टर

- शिक्षक अभिभावकों को आपस में भी एक दूसरे से भी परीचित करायें ताकि वे भी आपस में एक दूसरे का सहयोग करें और बच्चे की प्रगति व निगरानी में भी अपनी सहभागिता व जिम्मेदारी को निभायें ।

स्कूल मित्रों से बातचीत करें व सहयोग लें:–

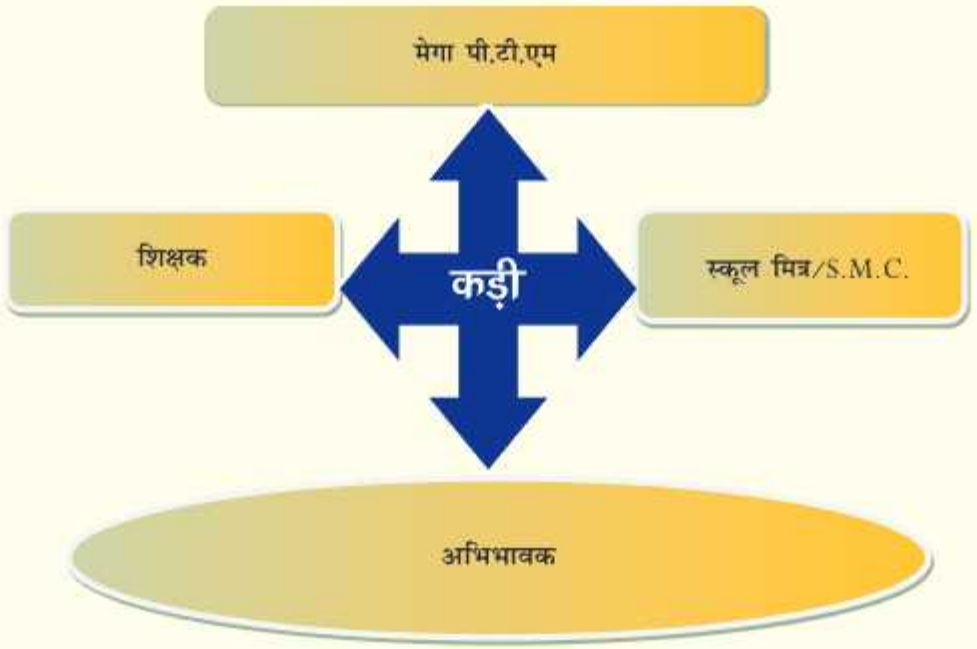

नोटः शिक्षक

- मेगा पी. टी. एम. के प्रत्येक फेज से पहले एस.एम. सी. के सदस्यों व स्कूल मित्रों के साथ मीटिंग करें व माता- पिता को मेगा पी. टी. एम. में बुलाने के लिये उनका सहयोग लें । (स्कूल मित्र के लिये Annexure 3, पेज नं. 29) देखें।
- स्कूल मित्रों को बतायें कि वे मेगा पी. टी. एम. के आयोजन की तारीख, दिन व समय के साथ उस समय की मेगा. पी.टी.एम. के आयोजन के पीछे के प्रयोजन को भी माता- पिता के साथ साझा करें।

2. जुड़ाव एवं संलग्नता (Connect & Engage)

उद्देश्य

शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से संपर्क स्थापित कर संचार व समय के अंतराल को कम करना।

अभिभावक से मेरी मुलाकात

क्रमांक	बच्चे का नाम	अभिभावक का नाम	किस महीने में अभिभावक से बातचीत हुई।	अब तक कुल कितनी बार बात हुई।	बातचीत का विषय

2. अभिभावकों से मिलने व बातचीत करने का प्रयास करें।

माध्यम	व्यक्तिगत स्तर पर	विद्यालय स्तर पर	बातचीत का विषय
स्कूल मित्र/S.M.C.			

शिक्षक, स्कूल मित्रों का सहयोग लें:–

स्कूल मित्र मेगा.टी.एम. के दौरान उन माता-पिता से संपर्क करने के कोशिश करें जो किन्हीं कारणों से या नहीं आ पा रहे हैं या भूल गए हैं। उन्हें मेगा पी.टी.एम. की याद दिलाने और उसमें शामिल होकर अपनी बात रखने को कहें।

3. कायम रखना (Sustain)

उद्देश्य:

- शिक्षकों द्वारा माता-पिता व बच्चों के साथ अच्छे संबंध बनाना ।

आओ जानें बातचीत के समय शिक्षक का व्यवहार:-

पहला शिक्षक: आपके बच्चे का नाम क्या है? अच्छा सुमित है। आप उसकी पढ़ाई पर ध्यान क्यों नहीं देते। वह खेलता बहुत ज्यादा है। हमारा कहना नहीं मानता यदि पढ़ेगा नहीं तो फेल हो जायेगा। गणित में तो बिल्कुल कुछ नहीं आता। मैंने आप को सूचित कर दिया है फिर मत कहना बताया नहीं था। नमस्ते।

दूसरा शिक्षक : आप सुमित के पापा हैं। आईये बैठिये। बताईये आप कैसे हैं? सब ठीक है। क्या आप पानी लेंगे। अरे सुमित बेटा तुम भी बैठो पापा के पास। आपका बेटा स्कूल की बहुत सी गतिविधियों में भाग लेता है। इसके बहुत सारे दोस्त हैं जिनकी यह मदद भी करता है। यह पढ़ाई में ठीक है पर गणित में थोड़ा

और मेहनत व अभ्यास करे तो और भी अच्छा कर सकता है। क्या आप घर पर इसकी सहायता कर सकते हैं यदि नहीं कर पा रहे तो कोई बात नहीं। सुमित बेटा आप मुझसे छुट्टी के बाद भी फोन से पूछ सकते हो । आप सुमित से नियमित रूप से पूछते रहे कि स्कूल में क्या हो रहा है? आप कुछ सुमित के बारे में या अपने बारे में बताना चाहेंगे?

- वे कितने भाई-बहन हैं?
- उसकी आदतें घर पर क्या हैं ?
- वह घर पर पढ़ाई के अलावा और क्या करता है?
- आप क्या काम करते हैं आदि।
- आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा । अगली बार फिर जरूर आइयेगा तब हम सुमित के बारे में और भी बात करेंगे। धन्यवाद ।

दोनों शिक्षकों के व्यवहार का निरीक्षण एवं मूल्यांकन करें:–

शिक्षक यह समझने का प्रयास करें कि अच्छे संबंध बनाने में माता-पिता से अधिक जिम्मेदारी एक शिक्षक के व्यवहारिक कौशल (soft skills) की होती है कि वह अपने व्यवहार व भाषा के द्वारा माता-पिता / अभिभावक से कैसा रिश्ता बनाता है?

एक शिक्षक होने के नाते
अपने व्यवहारिक कौशलों
की दक्षता को जानें।

- शारीरिक भाषा (हाव-भाव)
- धैर्य एवं संयम
- स्व-विवेक
- समय प्रबंधन कुशलता,
- संप्रेषण शैली
- अभिव्यक्ति कौशल
- समस्या समाधान क्षमता
- तनाव प्रबंधन
- नेतृत्व गुण
- जागरूकता
- आत्मविश्वास
- निर्णयशक्ति
- विश्लेषण क्षमता
- तदनुभूति आदि

नोट: माता – पिता व शिक्षक मीटिंग न केवल अकादमिक गतिविधियों से संबंधित चर्चा करने के लिए होती हैं बल्कि प्रशंसा के लिए एक मंच के रूप में भी कार्य करती हैं। एक बच्चे में नकारात्मक पहलुओं की ओर इशारा करना कभी-कभी उसे और उसके माता- पिता को हतोत्साहित कर सकता है। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने तरीके से अद्वितीय होता है, इसलिए बच्चे भी प्रेरित महसूस करते हैं जब उन्हें अपने शिक्षकों से प्रशंसा मिलती है और वे अधिक प्रभावी ढंग से काम करने की कोशिश करते हैं। शिक्षकों और माता-पिता के बीच एक सकारात्मक बातचीत उस बच्चे पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ती है। कुछ छिपी हुई प्रतिभाएँ हैं जो एक बच्चा स्कूल में विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी, दूसरों के साथ संवाद करने और एक समूह में काम करने के माध्यम से विकसित करता है। शिक्षक अभिभावकों को अपने बच्चे के इन गुणों से अवश्य परिचित करायें और व्यवहार कौशल से उन्हें प्रभावित करने का पूरा प्रयत्न करें।

मेगा. पी. टी. एम. की समाप्ति पर शिक्षक---

- स्वयं व स्कूल मित्रों की सहायता से मेगा. पी. टी. एम. की समाप्ति पर माता- पिता से उनकी प्रतिपुष्टि (Feedback) लें और प्राप्त प्रतिपुष्टि (Feedback) के आधार पर सभी एक साथ मिलकर अगली मेगा. पी. टी. एम. में चर्चा के लिये नये मुद्दे तय करें व बच्चों की आवश्यकताओं से माता-पिता को जागरूक करायें।
- स्कूल मित्र अभिभावकों से मिलकर उनके बच्चे की अध्ययन और परीक्षा से संबंधित अन्य समस्याओं और आवश्यकताओं जानने की कोशिश करें।
- सही समस्या को पहचानने में माता-पिता की मदद करें।
- प्राप्त जानकारी को शिक्षकों के साथ साझा करें।
- मेगा. पी. एम .एम की सफलता की जाँच के लिये मेगा पी. टी. एम. सफलता के मानदंड (Criteria of successful Mega PTM, Annexure-6) का प्रयोग करें।

मेगा पी. टी. एम. (फेज–2)

1. जागरूकता (Awareness)

उद्देश्य:

शिक्षक द्वारा माता-पिता को उनके बच्चों की शैक्षिक, मानसिक, शारीरिक और अन्य आवश्यकताओं के लिए उनकी भूमिका के बारे में संवेदनशील बनाना।

हमारे बच्चे की आवश्यकताएँ:–

प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है इसलिए हर बच्चे की आवश्कताएँ अलग-अलग हो सकती है।

खाना (Food), कपड़ा (Clothing), नींद (Sleeping), प्यार एवं स्नेह (Love & affection), सहयोग (Cooperation), सहपाठी (Classmate), आराम (Rest) शिक्षा (Education), मार्गदर्शन एवं परामर्श (Guidance & Counseling), सुरक्षा (Safety), आत्म सम्मान (Esteem), Rights (अधिकार), स्वायत्ता (Autonomy), स्व जानकारी (Self awareness), अभिव्यक्ति का मौका (Freedom of expression), देखभाल (Care), किताब (Books) पैन, पैंसिल, पेपर (Stationery), समय (Time)

आओ अपने बच्चे को जानें:-
मेरे बच्चे का नाम
मेरे बच्चे के स्कूल का नाम
मेरे बच्चे की कक्षा व सेक्शन
मेरे बच्चे के स्कूल प्रिंसिपल का नाम
हो जाइए, बच्चों को सिखाने के लिए तैयार
बच्चे ने घर पर कितने दिन स्कूल का काम किया?
i) पहला महीना
ii) दूसरा महीना
ii) तीसरा महीना
बच्चे के साथ हमने कितने दिन बैठकर बातचीत की?
i) पहला महीना
ii) दूसरा महीना
ii) तीसरा महीना
बच्चे के साथ कितनी बार खेल या मनोरंजन कार्य किया?
i) पहला महीना
ii) दूसरा महीना
ii) तीसरा महीना
बच्चे के साथ कितनी बार पढ़ाई की बात की ?
i) पहला महीना
ii) दूसरा महीना
ii) तीसरा महीना
इस बच्चे के शिक्षक से कितनी बार मिले या बात की ?
i) पहला महीना
ii) दूसरा महीना
ii) तीसरा महीना
इन महीनों की कुछ खट्टी-मीठी यादें-
बच्चों के स्कूल व पढ़ाई से जुड़ी जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर कॉल करें।
ध्यान दें :- इस नम्बर पर कॉल करने के लिए कोई पैसा नहीं लगेगा।
Toll Free Number
08069666666
कॉल करने के लिए इस नंबर को अपने फोन में सेव (Save) करें।
SCERT
Helpline Number :- 08069666666

हमारे बच्चे की आवश्यकताएँ:–

शारीरिक आवश्यकताएँ	मानसिक आवश्यकताएँ	सामाजिक आवश्यकताएँ	शैक्षिक आवश्यकताएँ	आपका योगदान

हमारे बच्चे का अधिगम स्तर

विषय	शैक्षिक प्रगति (विषयानुसार)	गैर शैक्षिक (पाठ्यसहगामी क्रियाओं में प्रगति)	अन्य पहलू (सामाजिक, मानसिक व भावानात्मक)
गणित			
अंग्रेजी			
हिंदी			
सामाजिक विज्ञान			
विज्ञान आदि			

ध्यान रहे:- शिक्षक केवल संप्रेक्षक के रूप में कार्य न करें।

नोट: दूसरे फेज की मेगा पी. टी. एम. बुलाने से पहले शिक्षक----

- एस.एम. सी. के सदस्यों व स्कूल मित्रों के साथ मीटिंग करें व माता- पिता को मेगा पी. टी. एम. में बुलाने के लिये उनका सहयोग लें ।
- स्कूल मित्रों को बतायें कि वे मेगा पी. टी. एम. के आयोजन की तारीख, दिन व समय को माता-पिता के साथ साझा करें।
- उन्हें उस समय की मेगा पी.टी.एम. के आयोजन के पीछे के प्रयोजन को माता-पिता को के साथ साझा करने को कहें।
- स्कूल मित्र मेगा.पी. टी. एम. के दौरान उन माता- पिता से संपर्क करने कि कोशिश करें जो किन्हीं कारणों से आ नहीं पा रहे या भूल गये हैं। उन्हें मेगा पी. टी. एम. की याद दिलाने व मीटिंग में शामिल हो अपनी बात रखने को कहें।

2. जुड़ाव एवं संलग्नता (Connect and Engage)

उद्देश्य:

विद्यालय गतिविधियों से जोड़ने के लिये शिक्षक एवं स्कूल मित्र द्वारा मिलकर अपने अभिभावकों का परिचय जानना ।

हमारे अभिभावक

शिक्षक (कुनाल) अपने कक्षा के बच्चों को दिल्ली में स्थित मदर डेरी प्लांट दिखाना चाहता है। वह कक्षा में बात कर ही रहा था कि सुरेंद्र ने उन्हें बताया कि उसके पापा उसी मदर डेरी प्लांट में नौकरी करते हैं। कुनाल बहुत परेशान था कि वहाँ से इतने अधिक (50) बच्चों को एक साथ निरीक्षण करने की मंजूरी कैसे मिलेगी? सुरेंद्र के पापा से बातचीत करके पता चला कि वे स्कूल के बच्चों के इस शैक्षिक निरीक्षण (Educational Visit) में उनकी मदद कर सकते हैं। क्या हमें इसमें उनकी सहायता लेनी चाहिए? क्या हम अपने और अभिभावकों से भी और विद्यालय के अन्य कामों में सहायता ले सकते हैं?

क्रमांक	बच्चे का नाम	अभिभावक का नाम	अभिभावक की रूचि, निपुणताएँ, कौशल	अभिभावक का नौकरी/पेशा	अभिभावक का शैक्षिक स्तर
1					
2					
3					

- शिक्षक अपने अभिभावकों का परिचय जानने का प्रयास करें कि हमारे अभिभावकों की रूचि, विशेष कौशल व पेशा क्या है? स्कूल मित्रों व एस. एम. सी. के सदस्यों साथ मिलकर उसकी सूची बनाकर अपने पास रखें। ताकि विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में अभिभावकों की रूचि के अनुसार उनकी आवश्यकता पड़ने पर उनकी सेवा अवश्य ली जा सके और अभिभावकों को उनकी जरूरत के अनुसार शैक्षिक व आर्थिक सेवा दी जा सके।
- **नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिये गये बिन्दु 21.4 और 21.6 के अनुसार सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाने के साथ-साथ प्रौढ़ माता-पिता को शिक्षा के अवसर प्रदान करते हुए उन्हें शिक्षा लेने के प्रोत्साहित करें। इस संदर्भ में स्कूल और शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका तय करें और मेगा पी.टी.एम. को एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करें।**

3. कायम रखना (Sustain)

उद्देश्य:

अभिभावकों की उपस्थिति व भागीदारी को निरंतर बनाए रखना।

अभिभावकों को अपनी भागीदारी के लिये प्रेरित करें ---

क्रमांक	बच्चे का नाम	अभिभावक का नाम	विद्यालय समिति का नाम जिसका वे हिस्सा बन सकते हैं जैसे (सांस्कृतिक, मीड डे मील, एस.एम.सी., ई.एम.सी आदि)
1			
2			
3			

Parents Outreach Programme (Delhi SMC)

- शिक्षक व प्रधानाचार्य अभिभावकों की सहभागिता वाले सभी कार्यक्रमों का आयोजन नियमित व सुचारु रूप से चलायें उनमें किसी प्रकार की रुकावट न आने दें जैसे एस.एम सी. का **पैरेंट आउटरीच कार्यक्रम**।
- स्कूल मित्र की सहायता लें जो एस. एम. सी. सदस्यों के साथ समुदाय और माता-पिता को एक साथ लाने में स्कूल की मदद करेंगे

नोट: मेगा पी.टी.एम. फेस-2 की समाप्ति पर शिक्षक---

- स्वयं व स्कूल मित्रों की सहायता से मेगा. पी. टी. एम. फेज-2 की समाप्ति पर माता-पिता से मेगा. पी.टी.एम. के बारे में उनकी प्रतिपुष्टि (Feedback) लें और प्राप्त प्रतिपुष्टि (Feedback) के आधार पर एक साथ मिलकर अगली मेगा.पी. टी. एम. में चर्चा के लिये नये मुद्दे तय करें।
- स्कूल मित्र अभिभावकों को बच्चों के व्यवहार में आने वाले नकारात्मक परिवर्तनों से अभिभावकों को जागरूक करायें व उनसे उनके कारण भी जानने का प्रयास करें और विस्तार से चर्चा करने के लिये उन्हें अगली मेगा. पी. टी. एम. में बुलायें।
- मेगा पी. एम. एम. की सफलता की जाँच के लिये मेगा पी. टी. एम. सफलता के मानदंड (Criteria of successful Mega PTM, Annexure-6) का प्रयोग करें।

मेगा पी. टी. एम. (फेज-3)

1. जागरूकता (Awareness)

उद्देश्य:

शिक्षकों द्वारा अभिभावकों को बच्चे के प्रति उनके द्वारा किये गये व्यवहार से अवगत कराना।

शिक्षक द्वारा अभिभावकों को परामर्श देना और संयुक्त प्रयासों के द्वारा बच्चों को गंभीर अवाछंनीय व नकारात्मक व्यवहार से बचा कर उनकी शैक्षिक प्रगति का मार्ग सुनिश्चित करना।

कोरोना महामारी के समय में या अन्य कारणों से बच्चे के समस्याग्रस्त होने पर अभिभावक अपने बच्चों के साथ व्यवहार कैसे करें?

हमारे प्रयास

वर्ष 2020 में कोविड-19 महामारी के कारण सभी विद्यालय पूरी तरह से बंद कर दिये गये। बच्चों की शिक्षा को ऑन लाइन मोड़ से जारी रखा गया। पीछे की उपलब्धि के आधार पर सभी छात्रों को अगली कक्षा प्रोन्नत कर दिया गया। मोहित भी प्रोन्नति पाकर कक्षा आठ में आ गया। कक्षा आठ में भी कोरोना महामारी के कारण लगभग यही हाल रहा और अब वह कक्षा नवीं में पढ़ रहा है।

कक्षा सातवीं व आठवी में मोहित को पढ़ने का बहुत शौक था विशेषकर सामान्य ज्ञान, इतिहास और भूगोल जैसे विषयों में वह विशेष रूचि रखता था। इसके अलावा चित्र बनाने, नई-नई चीजों को खोजने, शतरंज खेलने, साईकिल चलाने में उसकी विशेष रूचि थी। वह अपनी रूचि का काम जैसे चित्रकारी और नई-नई चीजों को खोजना चाहता था और चाहता था कि उसकी चित्रकारी और अन्यकामों को अन्य व्यक्ति भीं जानें और सराहें। परन्तु कई बार वह अनुभव करता कि उसके माता- पिता उसके पसंद के कामों को पसंद नहीं करते और इस कारण उसका रूझान उधर से हट गया।

कोविड-19 के बाद

उधर कोरोना महामारी के कारण जैसे सब कुछ बदल गया। अब मोहित का उसके दोस्तों के साथ प्रत्यक्ष रूप से मिलना और खेलना बंद हो गया। वह अब अपने घर की चार दीवारी में ही कैद होकर रह गया। वह ऑन लाइन कक्षा लेने की साथ-साथ ऑन लाइन ही दोस्तों के साथ खेलता व नए दोस्त बनाता। वह अपना अधिकांश समय मोबाईल के साथ नए खेलों को खोजने, ऑन लाईन खेलों को खेलने में बिताता जिसके कारण उसका अत्यधिक समय मोबाइल के साथ बीतने लगा और मोबाईल के अत्याधिक प्रयोग की वजह से उसे अब मोबाईल और ऑन लाइन खेलों (गेंमिग) की लत पड़ गई । वह धीरे धीरे अपनी कक्षाओं से समय बचाता और ऑन लाइन खेल खेलता। फोन इस्तेमाल न करने की दशा में मोहित जल्दी ही चिड़चिड़ा हो जाता। कभी सिर में दर्द, आँखों में खुजली आदि जैसी समस्याओं को बताता। उसने धीरे - धीरे अन्य शारीरिक क्रियाओं, व्यायाम आदि में भाग लेना बंद कर दिया । शिक्षा के प्रति उसका रूझान भी कम हो गया और उसका ध्यान भटने लगा। मोहित अब धीरे-धीरे एक समस्या ग्रस्त बच्चा बन गया जो कि माता-पिता और शिक्षकों के लिए अब एक चिंता का विषय है।

अब हमारी भूमिका:–

- इस स्थिति में माता-पिता के रूप में हमारी भूमिका क्या होगी?
- बच्चे के व्यवहार परिवर्तन के लिये हम किसे दोषी मानेंगे?
- क्या हम बच्चे को उसी के हाल पर छोड़ देंगे?
- यदि नहीं तब हम मिलकर कैसे बच्चे को इस समस्या से बाहर निकाल सकते हैं?
- बच्चे के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?
- मोहित की रूचि को नई दिशा देने के लिये विद्यालय में कौन सी शैक्षिक योजना चलाई जा रही है?
- मोहित के व्यवहार को ठीक बनाने और उसमें मूल्यों के निर्माण के लिये स्कूल में कौन सा पाठ्यक्रम लागू किया गया है?

नोट: शिक्षक चर्चा को अधूरी न छोड़े और नीचे दिए गए बिन्दुओं की तरफ अभिभावकों का ध्यान आकर्षित कर उन्हें बतायें कि वे किस प्रकार मोहित व उस जैसे अन्य बच्चों को समस्या से बाहर निकाल सकते हैं? विस्तार से उत्तर के लिये हमारे प्रयास Annexure - 30 देखें।

बच्चे के साथ व्यवहार करते समय अभिभावक ध्यान रखें-

1. बच्चे की स्वीकृति: कोशिश करें कि बच्चा अपनी स्वयं की इच्छा से ऑन लाईन खेल खेलना बंद कर दे।

2. अपने व्यवहार पर नियंत्रण :
   - परिवार के सभी सदस्य एक साथ एक ही समय पर बच्चे को समझाने का प्रयास न करें।
   - समझाते समय आक्रामक या भावुक न हों।
   - बातचीत करते समय बातचीत कि शब्दावली को ध्यान में रखें।
   - बच्चे की बातों को सुनने व समझने का पूरा-पूरा प्रयास करें।
   - किसी भी प्रकार की जल्दबाजी से बचें।
   - सारे दिन या हर समय एक ही बात (बच्चे के ऑन लाईन खेलों) को चर्चा का विषय बनाने से परहेज करें।
   - बच्चे को बार – बार टोकने और दूसरों के सामने नीचा दिखाने का प्रयास न करें।
   - बच्चे की रूचि व भावनाओं का सम्मान करें।

3. ऑन लाईन खेलों से होने वाले नुकसानों पर चर्चा करें।
4. सावधानियों पर चर्चा करें।
5. संपर्क करने योग्य व्यक्ति/ संस्थाएँ

- हमारे शिक्षक, स्कूल मित्र व एस. एम. सी. के अन्य सदस्यों के साथ बच्चों के व्यवहार में आने वाले अन्य नकारात्मक और अवांछनीय परिवर्तनों (बच्चों का तनाव में आना, झगड़ालू बनना, मारपीट करना, ड्रग्स लेना, मादक पदार्थों के सेवन आदि) को जानने के साथ-साथ उनके पीछे के कारणों को जानने का भी प्रयास करें।
- कारण जानने के बाद अपने स्तर पर समस्या को हल करने में अभिभावकों की मदद करें।
- अभिभावकों के लिए परामर्श (Counselling) सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास करें।
- शिक्षक अपने स्तर पर बच्चों की अन्य समस्याओं पर चर्चा करने के लिए परामर्श कक्षाओं (Counselling Classes) व कार्यशालाओं (Counselling Workshop) का आयोजन भी कर सकते हैं।

नोटः तीसरे फेज की मेगा पी. टी. एम. बुलाने से पहले शिक्षक----

- एस. एम. सी. के सदस्यों व स्कूल मित्रों के साथ मीटिंग करें व माता- पिता को मेगा पी. टी. एम. में बुलाने के लिये उनका सहयोग लें ।
- स्कूल मित्रों को बतायें कि वे मेगा पी.टी.एम. के आयोजन की तारीख, दिन व समय को माता-पिता के साथ साझा करें।
- उस समय की मेगा पी.टी.एम. के आयोजन के पीछे के प्रयोजन को माता- पिता के साथ साझा करने को कहे।
- स्कूल मित्र मेगा पी.टी.एम. के दौरान उन माता- पिता से संपर्क करने कि कोशिश करें जो किन्हीं कारणों से आ नहीं पा रहे या भूल गये हैं। उन्हें मेगा पी.टी.एम. की याद दिलाने व मीटिंग में शामिल हो अपनी बात रखने को कहें।

2. जुड़ाव एवं संलग्नता (Connect & Engage)

उद्देश्य:

अभिभावकों को विद्यालय के साथ विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जोड़ना।

साझेदारी व भागीदारी

तनु की मम्मी एक फैक्ट्री में काम करती है। उसे संगीत व नृत्य का न केवल शौक है बल्कि वह बहुत अच्छा नृत्य करती भी है । तनु ने नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया और उसने पुरस्कार लेते समय बताया कि उसने वह नृत्य अपनी माँ से सीखा परन्तु उसकी माँ को कभी किसी मंच पर मौका ही नहीं मिला जिसके कारण उसकी माँ वह अपना यह हुनर किसी को दिखा नहीं पाई।

तब क्या करना चाहिए ?

विभिन्न गतिविधियों जैसे कला, योगा, सांस्कृतिक नृत्य, गीत आदि में न केवल ऐसे अभिभावकों के हुनर को शामिल करें बल्कि स्कूल में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल के रूप में भी उन्हें आमंत्रित कर प्रोत्साहित करें ।

बच्चे का नाम	अभिभावक का नाम	गतिविधि का नाम	निर्णायक समिति का सदस्य

हमारे विजेता अभिभावक----

- मेगा पी.टी.एम. के दौरान शिक्षक अभिभावकों के हुनर को खोजने में स्कूल मित्रों की सहायता भी ले सकते हैं।
- शिक्षक अभिभावकों को समय - समय पर उनके द्वारा विद्यालय में दिये गये योगदान व उनके प्रयासों को पहचानकर विद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के लिये पुरुस्कार व सम्मान अवश्य दें व उनके नामों को भी स्कूल बोर्ड पर प्रदर्शित करें।
- अभिभावकों के हुनर में निखार और व्यवसायिक कुशलता लाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण केन्द्रों की जानकारी भी दें।

3. कायम रखना (Sustain)

उद्देश्य:

शिक्षकों द्वारा अपने अभिभावकों की समस्याओं व स्थिति को समझने का प्रयास करना।

कोरोना के कारण काफी लोगों की नौकरी चली गई । श्याम भी उन्हीं में से एक था । श्याम स्वभाव का बहुत शांत व मधुर भाषी है। उसका एक बेटा और एक बेटी है । दोनों बच्चें जुड़वां हैं और दोनों एक ही प्राईवेट विद्यालय और एक ही कक्षा (पाँचवीं) में पढ़ते हैं । श्याम के पास अब नौकरी नहीं है पर वह यह बात अपने बच्चों को नहीं बताना चाहता और वह घर से रोज टिफिन लेकर जाता है ताकि बच्चे समझें कि उनके पापा नौकरी पर जा रहे हैं। रोजगार न होने की वजह से वह इस बार बच्चों की स्कूल फीस नहीं भर पाया। वह लगातार तनाव में है। बच्चों के स्कूल से उसके पास लगातार कई बार फोन आया । फीस न भरने के डर से उसने कई बार फोन को नजरअंदाज किया। आखिर कब तक फोन को न उठाता आखिर उसे फोन को उठाना पड़ा और बड़े गुस्से में उसने कक्षाध्यापिका को जवाब दिया- कि फोन करने के अलावा उनके पास और कोई काम नहीं है क्या? वे उसे परेशान न करें। उसे बहुत काम करने पड़ते हैं। कक्षाध्यापिका ने जब या सब सुना तो उसे लगा कि यह तो बहुत बदतमीज और घमंडी है। उसे बात करने का तरीका नहीं आता।

श्याम की स्थिति का विश्लेषण करें:-

- श्याम का स्वभाव कैसा था ?
- क्या कक्षाध्यापिका द्वारा श्याम के जवाब से यह निष्कर्ष निकालना कि वह बहुत बदतमीज और घमंडी है सही है?
- श्याम के व्यवहार में परिवर्तन क्यों आया?
- कक्षाध्यापिका को क्या करना चाहिए और क्यों ?
- आप इस स्थिति में क्या श्याम की मदद कर सकते हो तो कैसे ?

शिक्षक:-

- किसी अभिभावक के लिये नकारात्मक और पक्षपाती रवैया का उपयोग न करें बल्कि अभिभावकों द्वारा किये गये अस्वीकार्य व्यवहार के पीछे के कारणों को जानने का प्रयास करें। क्या पता समस्या गंभीर हो और आप उनकी कुछ सहायता कर पायें।
- अधिकांश माता-पिता अशिक्षित, प्राथमिक और माध्यमिक उत्तीर्ण होते हैं इसलिए वे अपने बच्चों को घर पर शैक्षणिक सहायता प्रदान करने में सक्षम नहीं होते इसलिये कभी उन्हें इस बात के लिये दोषी न ठहरायें।

सम्पर्क करें:–

- व्हटसप ग्रुप व संदेश, जूम मीटिंग, गूगल मीट आदि के माध्यम से अभिभावकों से निरंतर संपर्क करें, उनका हालचाल पूछते हुए सकारात्मक रूप से बच्चे की शैक्षिक व अन्य पहलुओं की प्रगति से अवगत करायें।
- शिक्षक महत्वपूर्ण तिथियों और घटनाओं के लिए कक्षा समूह में माता-पिता को व्हाट्सएप संदेश भेज सकते हैं।
- अन्य सुझावों के लिये (Annexure 5, पेज नं. 32) देखें।

नोटः मेगा पी.टी.एम. की समाप्ति पर शिक्षक---

- स्वयं व स्कूल मित्रों की सहायता से प्रत्येक मेगा पी.टी.एम. की समाप्ति पर माता-पिता से उनकी प्रतिपुष्टि (Feedback) लें और उनसे प्राप्त प्रतिपुष्टि (Feedback) के आधार पर सभी एक साथ मिलकर अगली मेगा पी.टी.एम. में चर्चा के लिये नये मुद्दे तय करें।
- अभिभावकों कि आवश्यक माँग को अधिकारियों तक पहुँचाने के साथ- साथ एक और एक नई रणनीति के तहत कार्य करें।
- प्रत्येक मेगा पी.टी.एम. की सफलता की जाँच के लिये सफलता के मानदंड (Criteria of successful Mega PTM, Annexure-6) का प्रयोग करें।

Annexure 1

मेगा पी.टी.एम. के अन्य उद्देश्य (Other Objectives of Mega PTM):

- सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न शैक्षिक सरकारी योजनाओं को साझा करके सरकारी विद्यालयी की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।
- मिशन बुनियाद, हैप्पीनेस करिकुलम, ई.एम.सी जैसी योजनाओं के उद्देश्यों को माता-पिता के साथ साझा करना।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि कक्षा VI से IX में पढ़ने वाले दिल्ली सरकार के छात्र अपनी पाठ्यपुस्तकें पढ़ सकें और मिशन बुनियाद के तहत गणित व भाषा को लिखना व पढ़ना सीख सकें।
- साइबर सुरक्षा, फोन, इंटरनेट और व्हाट्सएप के दुरुपयोग के बारे में माता-पिता के बीच जागरूकता पैदा करना।
- माता-पिता और बच्चों के बीच छुट्टी के समय का प्रबंधन करने और बेहतर भविष्य के लिए अपनी शिक्षा के लिए अपना समय समर्पित करने के लिए जागरूकता पैदा करना।
- माता-पिता को अपने बच्चों की जरूरतों को समझने में मदद करना जैसे कि पर्याप्त भोजन और नींद का ध्यान रखने की सलाह देना, ताकि उनकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो।
- माता-पिता को स्कूल की गतिविधियों के संबंध में अपने बच्चों के साथ दैनिक संवाद करने के लिए प्रेरित करना।
- माता-पिता और शिक्षकों को एक साथ लाने के लिए, बच्चों के लिए एक मजबूत शैक्षिक नींव के विकास में मदद करना।
- माता-पिता को स्कूल भवनों, कक्षाओं, डेस्क ब्लैकबोर्ड, शौचालय, स्वच्छ पेयजल की सुविधा आदि की जांच करने के अवसर प्रदान करना।
- माता-पिता द्वारा उठाए गए मुद्दों का संज्ञान लेने के लिए स्कूल अधिकारियों के लिए एक माध्यम बनना।

मेगा पेरेंट्स टीचर मीटिंग में केंद्रित मुख्य मुद्दे (Key issues focused in the Mega Parent Teacher Meeting)

क्रमांक	दिनांक	केंद्रित मुख्य मुद्दे
1	30 जुलाई 2016	• माता-पिता और शिक्षकों के बीच निरंतर बातचीत को प्रोत्साहित करना ।
		• माता-पिता को शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में बताना।
		• माता-पिता को प्रतिक्रिया देने और ऐसी बैठकों के द्वारा अपनी शिकायतों व सुझावों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करना ।
2	15 अक्टूबर 2016	• सीखने के स्तर में सुधार और माता-पिता से प्रतिक्रिया लेने के लिए सरकार द्वारा अपनी महत्वाकांक्षी चुनौती 2018 योजना शुरू करने के बाद आयोजित पहली परीक्षा के परिणाम साझा करना।

क्रमांक	दिनांक	केंद्रित मुख्य मुद्दे
3	25 फरवरी 2017	• एम.पी.टी.एम. का उद्देश्य केवल 12वीं कक्षा के छात्रों के अभिभावकों से बातचीत कर छात्रों के परीक्षा के दबाव को कम करना और प्रत्येक छात्र को सर्वोत्तम संभव सहायता प्रदान करना।
4	1 सितंबर 2017	• दिल्ली सरकार का एम पीटीएम भाग 2: कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा पर माता- पिता से चर्चा करना।
5	21 अप्रैल 2018	• 'मिशन बुनियाद' पहल की अवधारणा और लाभ से माता-पिता को अवगत कराना।
		• मिशन बुनियाद के लिए बच्चों के लक्ष्यों को उनके माता-पिता के साथ साझा करना।
		• माता-पिता और बच्चों से अनुरोध किया गया कि वे अपनी छुट्टियों का त्याग करें और तीन महीने उनकी शिक्षा और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए समर्पित करें।
6	20 अक्टूबर 2018	• मेगा पी.टी.एम. के दौरान दिल्ली शिक्षा निदेशालय के सभी सरकारी स्कूलों में पुस्तकालय मेले के माध्यम से पुस्तकालय जागरूकता दिवस का आयोजन करना।
7	12 जुलाई 2019	• शिक्षकों को खुशी और उद्यमिता पाठ्यक्रम पर बातचीत के अलावा अनुपस्थिति और छात्रों की अनियमित उपस्थिति के कारणों को जानने पर जोर देना। साथ ही स्कूलों के प्रमुखों को 'कम उपलब्धि वाले जिनके माता-पिता पीटीएम में शामिल नहीं हुए' की एक सूची तैयार करने के लिए कहा गया।
		• छात्रों की पहचान उनके पिछले शैक्षणिक सत्र 2018-19 के परिणामों और मिशन बुनियाद के तहत मूल्यांकन के आधार पर करना। इन छात्रों के माता-पिता को बाद में बैठक के लिए बुलाया जाएगा।
8	19 अक्टूबर 2019	• खुशी और उद्यमिता पाठ्यक्रम के संबंध में शिक्षा निदेशालय द्वारा की गई पहल के बारे में माता-पिता को सूचित करना । बैठक के दौरान माता-पिता के साथ अनुपस्थिति और अनियमित उपस्थिति के मुद्दे पर चर्चा करना और प्रत्येक छात्र की प्रगति पर माता-पिता को व्यक्तिगत रूप से जानकारी देना ।
9	4 जनवरी 2020	• छात्रों के प्रगति पर चर्चा के साथ साथ एक निरीक्षण रिपोर्ट तैयार करना।
10	19 जुलाई 21- 31 जुलाई 21	• कोविड-19 के परिणामों से अवगत कराते हुए प्रत्येक छात्र की प्रगति पर माता-पिता को व्यक्तिगत रूप से जानकारी देना और छात्रों और अभिभावकों को तनाव से मुक्त करने का प्रयास करना।

Annexure 2

मैनुअल की आवश्यकता (Need of Manual)

घर का वातावरण बच्चों के सीखने की बुनियादी नींव प्रदान करता है और यह छात्र के जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। बच्चों में उचित अध्ययन की आदत विकसित करने में घर का वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता से प्यार और स्नेह, भाई-बहन के साथ संबंध, माता-पिता की शैक्षिक योग्यता, परिवार की आर्थिक स्थिति और उन्हें उपलब्ध अन्य भौतिक सुविधाएं अध्ययन की आदतें के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। घर के वातावरण और बच्चों की अध्ययन की आदतों में क्या संबंध है? यह जानने के लिये मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान घुम्मनहेरा (एस.सी.ई.आर.टी.2021) टीम के द्वारा **"दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के कक्षा 10वीं के छात्रों के घर के वातावरण का उनके अध्ययन की आदतों के संबंध का अध्ययन"** पर शोध किया गया जिसमें यह जानने का प्रयास किया गया कि कक्षा 10 के छात्रों के घर के पर्यावरण का उनके अध्ययन की आदतों से क्या संबंध है? शोध परिणामों में पाया गया कि घर के वातावरण और छात्रों की अध्ययन की आदतों में सकारात्मक संबंध है। 68% छात्रों ने माना कि उन पर घर पर अधिक प्रतिबंध लगाये जाते हैं उन्हें माता- पिता के अक्सर कठोर नियमों व अनुशासन को मानना पड़ता है और उनकी आवश्यकताओं की चीजों से उन्हें वंचित रहना पड़ता है यह स्थिति लड़कियों में और भी अधिक है। केवल 36% छात्र घर के वातावरण और अभिभावकों से उनके प्रति रवैये से बहुत ही खुश थे। यह दर्शाता है कि माता - पिता बच्चों के पालन पोषण में अनुशासन एवं नियमों की प्रतिबध ता को अधिक अहमियत देते हैं जिस कारण अभिभावकों और बच्चों के संबंधों में अनुशासन और प्रतिबंधों (जैसे बच्चों को उनके अधिकारों से वंचित रखने, अपने आदेशों का पालन करवाने आदि) के कारण उनके बीच एक दूरी है। माता- पिता की इस सोच के पीछे और भी कई कारण हो सकते हैं परन्तु जागरूकता भी उनमें से एक हो सकता है। हम उचित परामर्श के द्वारा इस समस्या का समाधान आसानी से कर सकते हैं और मेगा पी. टी. एम. माता-पिता और शिक्षक के मधुर एवं अच्छे संबंधों के माध्यम से सभी बच्चों की क्षमताओं में सुधार करने का अवसर प्रदान करने का एक प्रयास है। इस संबंध में मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान घुम्मनहेरा (एस.सी.ई.आर.टी. 2019-2020) द्वारा **'दिल्ली के दक्षिण पश्चिम जिले में पढ़ने वाले छात्रों के अधिगम संप्राप्ति पर मेगा पेरेंट टीचर मीटिंग के प्रभाव पर एक अध्ययन'** पर एक शोध अध्ययन किया गया। इस शोध की खोज ने इस बात के पुख्ता सबूत दिए कि माता-पिता की भागीदारी शैक्षिक विकास के साथ-साथ छात्रों के अन्य सामाजिक, आर्थिक व नैतिक विकास के लिए अत्यधिक प्रभावी है शोध निष्कर्षों से पता चला कि 50% से अधिक माता-पिता पी टी एम और मेगा पी. टी. एम की भूमिका से पूरी तरह अवगत नहीं थे। कई माता-पिता अपने व्यवसाय के समय के कारण पी.टी.एम. में शामिल नहीं हो पाये और अपनी व्यस्तता के कारण व अन्य कारणों की वजह से स्कूल की अन्य गतिविधियों में भी बहुत कम भाग ले पाते। शिक्षकों के अनुसार स्कूल में अपने स्तर पर की जाने वाली वाली पी.टी.एम. में माता-पिता की औसत उपस्थिति दर 40% -60% थी जबकि मेगा पी.टी.एम. में माता-पिता की औसत उपस्थिति दर 60%-80% थी। उन्होंने बताया कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि मेगा पी.टी.एम. के कार्यान्वयन के बाद माता-पिता की उपस्थिति व बच्चों की उपस्थिति व बच्चों के अधिगम स्तर व अधिगम परिणामों में काफी सुधार हुआ है लेकिन अभी भी निर्धारित लक्ष्य पूरा हासिल नहीं हुआ है।

शोध में यह पाया गया कि मेगा पी.टी.एम. के द्वारा बच्चों के विकास और मिशन बुनियाद के तहत पढ़ाये जाने विषयों जैसे गणित व भाषा में प्रगति हुई है। मेगा पी.टी.एम. की उप्लब्धि पी.टी.एम. से अधिक है। लेकिन मेगा पी.टी.एम. में अभी भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां हमें इसे सफल बनाने के लिए और प्रयास करने होंगे। जिन क्षेत्रों की पहचान की गई। उन्हें हमने तीन आयामों में शामिल करके आवश्यक सुधार करने का प्रयास किया।

Annexure 3

एस.एम.सी. का पैरेंट आउटरीच कार्यक्रम व स्कूल मित्र

"स्कूल प्रबंधन समितियों (एस.एम.सी.) की परिकल्पना शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत निगरानी और जवाबदेही के लिए स्कूलों के शासन में माता-पिता की भागीदारी बढ़ाने और माता-पिता और स्कूल के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने के साधन के रूप में की गई थी। एसएमसी ने दिल्ली सरकार के स्कूलों के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे यह सुनिश्चित करने से लेकर स्कूलों को साफ-सुथरा रखने से लेकर नियमित रूप से स्कूल नहीं जाने वाले छात्रों तक पहुंचने, समर कैंप आयोजित करने, मेला पढ़ने आदि में मदद करने तक कई गतिविधियों में शामिल रहे हैं। हालांकि, दिल्ली शिक्षा सुधार पर हाल ही में जारी बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की रिपोर्ट से पता चला है कि इसके बावजूद स्कूलों में एसएमसी की सक्रिय भागीदारी के कारण, 63% माता-पिता एस.एम.सी. के बारे में नहीं जानते हैं। यह एक चिंताजनक संकेत है क्योंकि एस.एम.सी. माता-पिता और स्कूल के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने के लिए हैं, एक ऐसा माध्यम जिसके द्वारा माता-पिता की विभिन्न चिंताएं स्कूल प्रबंधन तक पहुंच सकती हैं। हालांकि, यह अस्तित्व में प्रतीत होता है क्योंकि ऐसी कोई संरचना या तंत्र नहीं है जिसके द्वारा एसएमसी सदस्य निरंतर आधार पर माता-पिता तक पहुंच सकें।

माता-पिता तक पहुंच अक्सर संस्थागत नहीं होती है क्योंकि हर वर्ग और हर वर्ग के बच्चे अलग-अलग इलाकों से आते हैं। जबकि कई एसएमसी सदस्य भी उसी इलाके से आते हैं, फिर भी उन्हें उस इलाके में रहने वाले अन्य माता-पिता के बारे में पता नहीं है। इसलिए स्कूलों के लिए बड़ी संख्या में अभिभावकों तक पहुंचने के लिए, प्रत्येक स्कूल के लिए स्थानीय स्तर पर एक अभिभावक आउटरीच योजना शुरू की गई है।

कार्यक्रम

माता-पिता आउटरीच कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश:	
1)	प्रत्येक एस.एम.सी. सदस्यों को अपने इलाके में रहने वाले 50 छात्रों तक पहुंचने की जिम्मेदारी दी जा रही है। उन्हें नियमित रूप से छात्रों और उनके परिवार के साथ संबंध बनाए रखने के लिए कहा जाएगा।
2)	जिन स्कूलों में नामांकन संख्या बड़ी है, उनके लिए स्कूल मित्र बनाए गए हैं जो एस.एम.सी. सदस्यों के साथ समुदाय और माता-पिता को एक साथ लाने में स्कूल की मदद करते हैं। प्रत्येक स्कूल मित्रों को अधिकतम 50 छात्रों और उनके परिवारों तक पहुंचने की जिम्मेदारी दी गई है।
3)	एस.एम.सी. सदस्य और स्कूल मित्रा टेलीफोन या घर के दौरे और आमने-सामने बातचीत के माध्यम से माता-पिता के साथ निरंतर संपर्क में रहेंगे।

Annexure 4 (हमारे प्रयास)

बच्चे की स्वीकृति : कोशिश करें कि बच्चा अपनी स्वयं की इच्छा से ऑन लाईन खेल खेलना बंद कर दे। इसकी स्वीकृति बच्चे के द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार स्वीकार्य होनी चाहिए । जबरदस्ती से निकाला गया हल या थोपा गया समाधान मानसिक समस्या को खत्म नहीं करता बल्कि उससे जुड़ी कई अन्य समस्याओं को जन्म देता है। जैसे बच्चे का चोरी से छुपकर ऑन लाईन खेल खेलना और तनाव में रहना ।

अपने व्यवहार पर नियंत्रण :

- कभी भी परिवार के सभी सदस्य एक साथ एक ही समय पर बच्चे को समझाने का प्रयास न करें।
- समझाते समय आक्रमक या भावुक न हों। अपने व्यवहार पर संयम रखकर बच्चे से बातचीत करें। अपनी राय या बातों को अनावश्यक रूप से बच्चे पर न थोपें। परिणाम घातक हो सकते हैं।
- बातचीत करते समय बातचीत कि शब्दावली को ध्यान में रखें । बातचीत की भाषा मर्यादित व तर्क संगत होनी चाहिए क्योंकि गलत शब्दों के प्रयोग से बच्चे की भावनाओं को ठेस लग सकती है।
- बच्चे की बातों को सुनने व समझने का पूरा - पूरा प्रयास करें व उनके विचारों व भावनाओं को सम्मान दें। क्योंकि बच्चे के भी अपने विचार व सुझाव होते हैं यह बात अलग है कि अनुभव की कमी या आयु कम होने के कारण उनके द्वारा दिए गये ज्यादातर तर्क सही न हों । धैर्य के साथ बच्चे को सही मार्ग पर लाने का प्रयास करें।
- बच्चों की बातों व समस्याओं को सुनते समय यदि उनकी बातों को गंभीरता से नहीं किया जाता तो वे समझते हैं कि माता- पिता सिर्फ अपनी औपचारिकता पूरी कर रहे हैं और उनको कोई महत्व नहीं दे रहे हैं। जैसे बात सुनते समय माता- पिता का बच्चे से यह कहना कि जल्दी-जल्दी अपनी समस्या / बात बताओ उनके पास और भी बहुत काम हैं बच्चे के प्रति उनके इसी नकारात्मक रवैये को प्रदर्शित करता है।
- किसी भी प्रकार की जल्दबाजी से बचना होगा। एक बार में ही बच्चा हमारी बात से सहमत हो जाए और हमारी बात मान जाए यह जरुरी नहीं है इसलिये बच्चे को पर्याप्त समय देते हुए व स्वयं के व्यवहार पर नियंत्रण रखते हुए एक निर्धारित समयवधि के अनुसार बच्चों से निरंतर उस समस्यात्मक विषय पर चर्चा करें।
- चर्चा करते समय सारे दिन या हर समय एक ही बात (बच्चे के ऑन लाईन खेलों) को चर्चा का विषय बनाने से परहेज करें क्योंकि इससे परिवार में मानसिक तनाव बढ़ता है और रिश्ते और खराब होने की संभावना बढ़ जाती है।
- बच्चे को बार - बार टोकने और दूसरों के सामने नीचा दिखाने का प्रयास न करें । बच्चे को छोटे - छोटे कार्यों में आवश्यकता अनुसार संलग्न करें ताकि बच्चे सक्रिय व चुस्त बन सके । इसके अलावा उसे अन्य कार्यों जैसे शारीरिक व्यायाम, योगा, बागवानी आदि कार्यों में भी भाग लेने के लिये प्रेरित करें।
- घर के अंदर के खेले जाने वाले अन्य खेलों जैसे शतरंज, चोर सिपाही, सोलह पर्ची ठप, कैरम बोर्ड, लूडो, छुपम छुपाई, लोहा, लक्कड़, रस्सीकूद आदि अन्य पारंपरिक खेलों को बढ़ावा दें। समय के अनुसार स्वयं भी उनके साथ खेलें ।
- बच्चे की रूचि व भावनाओं का सम्मान करते हुए व उनकी रूचि के शैक्षिक विषयों को जानते हुए उसे उन्हीं विषयों में कुछ नया खोजने या नया करने को प्रेरित करना चाहिए जैसे उपरोक्त केस स्टडी मे मोहित को भूगोल विषय व सामान्य जानकारी आदि में नए तथ्यों को खोजने के लिये पुनः प्रेरित किया जा सकता है और एक बार फिर उनकी तरफ उसका ध्यान पुनः आकर्षित करने का प्रयास किया जा सकता है।

- बच्चे को समझाते समय वर्तमान परिपेक्ष के संदर्भ में बात करें। अपने बच्चे की तुलना कभी भी अन्य बच्चों व अपने साथ या अपने स्वयं के बचपन के साथ न करें । हर बच्चे के अंदर अपनी प्रतिभा होती है इसलिये उसका सम्मान करें। इस बात को स्वीकार करें कि समय के साथ परिस्थिति, हमारी सोच और हमारे खेलने के तरीकों में अंतर आया है
- तकनीक या उपकरण कभी भी अपने आप में बुरे नहीं होते। यदि इनका प्रयोग सही प्रकार से किया जाए तो ये हमें बहुत फायदा पहुँचाते हैं इनसे हमारे समय व श्रम की बचत होती है। बच्चा तकनीकी के माध्यम से बहुत कुछ सीख सकता है उसे तकनीकी की सही दिशा में बढ़ने को प्रोत्साहित करें।
- स्वयं भी मोबाइल का इस्तेमाल आवश्यकतानुसार करें और बच्चों के साथ कुछ देर बातचीत जैसे उनकी बातों को सुनें, अपनी बातें उनके साथ साझा करें व मनोरंजन करें जिससे हमारे बच्चे भावनात्मक रूप से हमसे जुड़ पाये और उन्हें लगे कि माता- पिता उनकी बातों को सुन व समझ रहे हैं।

5. नुकसान पर चर्चा :

ऐसे बच्चों की घटनायें भी अपने बच्चों के साथ प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ अवश्य साझा करनी चाहिए जो साइबर बुलिंग, हैकिंग, शारीरिक, मानसिक व भावात्मक रुप से ऑन लाइन खेलों के शिकार हो चुके हैं । तत्पश्चात यह निष्कर्ष निकलवाने का प्रयास करें और बच्चों (मोहित) को स्वयं यह सोचने व उस पर विचार करने के लिये प्रेरित व विवश करें कि उनके लिये क्या उचित है और क्या अनुचित है ?

6. सावधानियों पर चर्चा :

ऑन लाइन खेल खेलते हुए हमें किन किन सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए उसके बारे में उन्हें अवश्य बतायें जैसे:

- सही व वास्तविक नाम का प्रयोग करते हुए न खेलना।
- किसी भी अजनबी के साथ ऑन लाइन बातचीत न करना व उसे संदेश न भेजना ।
- किसी भी अजनबी को अपनी दोस्त न बनाना ।
- अपनी व्यक्तिगत जानकारी उसके साथ साझा न करना।
- किसी भी पिक्चर, वीडियो या लिंक को अनजानी वेबसाईट से डाउन लोड न करना आदि।

7. संपर्क करने योग्य व्यक्ति/संस्थाएँ

1. समस्या ज्यादा गंभीर होने पर शिक्षकों व परामर्शदाता के साथ अवश्य साझा करें व उनसे परामर्श अवश्य लें।
2. बच्चे के अवांछनीय व्यवहार जैसे मोहित की केस स्टडी के अनुसार आँखो को लगातार मसलना, पागलों जैसी हरकतें करना आदि कोई विकार होने पर या उसके लक्षण नजर आने पर चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक या परामर्शदाता से संपर्क करें।
3. दिल्ली केयर के नाम से दिल्ली बाल अधिकार संरक्षण आयोग (DCPCR) द्वारा गैर सरकारी संगठन की सहायता से बच्चों के लिये चलाई गई परामर्श सेवाओं के बारे में बतायें।
4. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा 'CBSE Dost For Life' ऐप के बारे में जानकारी दें ।
5. दिल्ली सरकार के द्वारा जारी किये गये यूथ हेल्प लाइन नम्बर 180011688 और 10580 का नम्बर बतायें जिस पर पर छात्रों की शैक्षिक, मानसिक, भावनात्मक समस्याओं के संदर्भ में परामर्श लिया जा सकता है।

Annexure 5 (अन्य सुझाव)

1. मेगा पी.टी.एम. के दौरान सामूहिक-चर्चा, विचार-मंथन और नाटक आदि के माध्यम से पी.टी.एम. को सार्थक बनायें।
2. शिक्षक मैनुअल में दी गई केस स्टडी, अभिभावकों के अनुभवों, वास्तविक घटनाओं, वास्तविक कहानियों के अलावा भी अन्य केस स्टडी और गतिविधियों आदि का भी प्रयोग कर सकते हैं।
3. अपने प्रधानाचार्य या अधिकारियों की सहमति से महीने के किसी भी एक सप्ताह में प्रतिदिन एक कक्षा का समय निर्धारित कर लें कि जब अभिभावक आप से अपनी सुविधा के अनुसार मिलकर बातचीत कर सकें और इसकी सूचना अभिभावकों को जरूर दें ।
4. मेगा पी. टी. एम के अलावा भी माता-पिता के साथ नियमित मासिक बैठकें आयोजित करें।
5. स्कूली बच्चों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं (हैप्पीनेस करिकुलम, देशभक्ति करिकुलम, मिशन बुनियाद और एंटरप्रेन्योरशिप माइंड्सेट करिकुलम, बिजिनेस ब्लास्टर आदि) से संबंधित योजनाओं पर न केवल चर्चा की जाए बल्कि हैंडआउट (चित्र, पोस्टर) वितरित किये जायें जिससे अभिभावक अपने बच्चे के भविष्य को सुरक्षित बनाने में शिक्षकों को सहयोग दें पायें ।
6. विभिन्न कक्षाओं के माता-पिता को उत्सव के विभिन्न दिनों में, सुबह की सभा के समय और शून्य अवधि के दौरान आमंत्रित करें।
7. अवकाश वाले दिन योगा, माइंड्फुलनेस व हैप्पीनेस क्रियाकलापों का आयोजन कर उन्हें आमंत्रित किया जाये और सहभागिता के लिये उन्हें उचित पुनर्बलन दिया जाए।
8. माता-पिता के मनोरंजन के लिये विभिन्न प्रकार कला, नृत्य, मेंहदी, संगीत, अंताक्षरी, योगा, जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन करायें और विजेता को उचित सम्मानजनक पारितोषिक प्रदान करें तथा अन्य अभिभावकों को उनकी सहभागिता के लिये सम्मानित करें ।
9. वर्ष में कम से कम साल में दो बार अभिभावक जागरुकता मेले का आयोजन किया जाना चाहिए और अभिभावकों को सामुहिक रूप से आमंत्रित कर उन्हें बच्चों की शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं से अवगत कराये।
10. आवश्यकता के अनुसार विषय विशेषज्ञों या बच्चे की व्यक्तिगत शारीरिक व मानसिक समस्याओं के परामर्श के लिये कुशल परामर्शदाताओं व गैर सरकारी संगठनों (NGO) को भी अभिभावकों से बातचीत करने के लिये मेगा पी.टी.एम. के दिन बुलाकर परामर्श प्रदान करें।
11. विद्यालय अपने स्तर एक परामर्श / सलाहकार समिति का निर्माण करें जो अभिभावकों व बच्चों को उनकी समस्या का हल प्रदान करने में उनका मार्गदर्शन करें।
12. स्कूल सामग्री चाहे व भौतिक हो या शैक्षिक पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियों हों। इन सभी के विकास में माता-पिता को शामिल करने का प्रयास करें व उनके योगदान को सराहें व उचित सम्मान दें।

13. ऐसे अभिभावकों कि भी सूची बनायें जिन्होंने किसी भी गतिविधि में कभी भी भाग नहीं लिया । कारण जान उसका हल ढूँढने का प्रयास करें।

14. मेगा पी.टी. एम के बाद प्राप्त परिणामों की नियमित रूप से समीक्षा अवश्य करें। अभिभावकों के द्वारा दिये जाने वाले सुझावों की अनदेखी कभी ना करें।

15. माता-पिता /अभिभावकों को स्कूल प्रबंधन समिति और मध्याह्न भोजन समिति, अनुशासन समिति जैसी अन्य समितियों का हिस्सा बनाया जाए और नई समितियाँ जैसे हैप्पीनेस समिति, देशभक्ति समिति, एंटरप्रेन्योरशिप समिति, सांस्कृतिक समिति आदि का गठन कर अभिभावकों को उनमें शामिल करें ताकि उनकी भागीदारी व उनकी सहभागिता के द्वारा नए- नए निर्णय लिये जा सके और आवश्यक सुधार किये जा सके।

क्रमांक	बच्चे का नाम	अभिभावक का नाम	समिति का नाम जिसका वे हिस्सा वर्तमान में हैं।	समिति का नाम जिसका वे हिस्सा बन सकते हैं।
1				
2				
3				
		कुल सहभागी		

16. स्कूल में चलाये जा रहे विभिन्न क्लबों जैसे कला क्लब, योगा क्लब, विज्ञान क्लब, समाजिक विज्ञान क्लब आदि की गतिविधियों में आभिभावकों का न केवल शामिल करें बल्कि उसका सदस्य बनाकर उनका सहयोग भी लें।

कक्षा:

क्रमांक	बच्चे का नाम	अभिभावक का नाम	क्लब का नाम जिसका वे हिस्सा बने हुए हैं ।	नये अभिभावक का नाम जो क्लब का हिस्सा बन सकते हैं जैसे (कला, योगा, आदि)
1				
2				
3				

17. मेगा पी.टी.एम. के दौरान अभिभावकों व बच्चों की उपस्थिति का रिकॉर्ड अवश्य रखें ताकि बाद में उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सके।

क्रमांक	अभिभावक	उपस्थिति	अनुपस्थित
पहली मेगा पी.टी.एम.			
दूसरी मेगा पी.टी.एम.			
तीसरी मेगा पी.टी.एम.			

18. सहमति व असहमति वाले मुद्दों का रिकार्ड भी अवश्य रखें ताकि उन पर आवश्यक निर्णय लिये जा सकें ।

क्रमांक	सहमति वाले मुद्दे	असहमति वाले मुद्दे	टिप्पणी

19. विभिन्न समितियों व गतिविधियों में केवल कुछ ही अभिभावकों को बार- बार न शामिल न करें और न ही अनावश्यक रूप से उन पर दवाब बनाने का प्रयास करें बल्कि कोशिश करें की सभी अभिभावक अपनी इच्छा व रूचि के अनुसार आगे आयें और अपनी सहभागिता विद्यालय संबंधी गतिविधियों में दे।

नोट: अधिकांश अभिभावक दैनिक वेतन के अनुसार कार्य करते हैं इसलिये जब भी वे विदयालय कि किसी मीटिंग, सेमिनार या वर्कशॉप में शामिल होते हैं तब उन्हें उस दिन का वेतन नहीं मिलता। इसलिये उन्हें विद्यालय में आमंत्रित करते समय यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उन्हें कोई आर्थिक हानि न हो।

Annexure 6

मेगा पी. टी. एम. की सफलता के मानदंड (Success Criteria of Mega PTM)

जाँच सूची (Check List)

मेगा पी.टी.एम. से पहले (Before Mega PTM): जागरूकता (Awareness)

शिक्षा निदेशालय के सभी आदेशों को पूरा करने के अलावा आवश्यक तैयारी की गई जैसे:

- सभी छात्रों व अभिभावकों को मेगा पी.टी.एम. की तारीख और समय के बारे में पहले से सूचित किया गया।
- मेगा पी.टी.एम. से पहले आप मानसिक रूप से पी.टी.एम. के लिये तैयार व उत्साहित हैं।
- समय प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए यह ध्यान रखा गया कि सभी बच्चों के माता- पिता को पर्याप्त समय मिल सके ।
- बैठने का स्थान सुनिश्चित किया गया ताकि एक शांत वातावरण में बातचीत की जा सके।
- मेगा पी.एम से पहले उन बिंदुओं को नोट किया गया जिन बिंदुओं पर अभिभावकों से बातचीत करनी थी।
- चाय, पानी, कुर्सी आदि की उचित व्यवस्था की गई।
- प्रत्येक मेगा.पी. टी. एम. फेज से पहले आपके द्वारा स्कूल मित्रों के साथ मेगा पी. टी. एम. के बारे में मीटिंग की गई।
- स्कूल मित्रों ने मेगा. पी. टी. एम. की सूचना प्रेषित करने में आपका पूरा सहयोग किया।
- आप मेगा. पी. टी. एम. के बारे में सूचना पहुँचाने के अपने प्रयासों से संतुष्ट हैं।

मेगा पी .टी. एम के दौरान (During Mega PTM): जुड़ाव एवं सलंग्नता (Engage and Connect)

- मेगा. पी. टी. एम. के दौरान आप सभी अभिभावकों से बातचीत कर पाये।
- मेगा पी. टी. एम. के दौरान स्कूल मित्रों ने अभिभावकों से संपर्क बनाने में आपकी मदद की।
- माता-पिता के साथ मीटिंग के उद्देश्यों को साझा किया गया।
- आपके द्वारा अभिभावकों व बच्चों की उम्मीदों व अपेक्षाओं की पहचान करने में सहायता करने का प्रयास किया गया।
- संयम, धैर्य और व्यवहारिक कुशलता का परिचय देते हुए एक सौहार्द पूर्ण वातावरण का निर्माण किया गया ।
- संप्रेषण के लिये आसान और स्थानीय भाषा का प्रयोग किया गया ताकि अधिकतर माता-पिता आसानी से अपने विचार व्यक्त कर सकें।
- अभिभावकों को बच्चों के संदर्भ में साझा की गई व्यक्तिगत व निजी बातों को गोपनीय रखने के लिये उन्हें आश्वस्त किया गया।
- माता-पिता को रचनात्मक तरीके से बच्चों के प्रगति के बारे में प्रतिक्रिया दी गई ।
- छात्रों को भी माता- पिता के साथ मेगा पी.टी.एम. के दौरान अपनी बात रखने के लिये मौका देने के साथ- साथ उन्हें प्रोत्साहित किया गया ।
- मेगा पी.टी.एम. के दौरान विद्यार्थियों के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक प्रगति रिकॉर्ड को माता- पिता के साथ साझा किया गया ।
- समझाने के लिये वास्तविक घट्नाओं व संबंधित गतिविधियों का उपयोग किया गया।

- चर्चा के दौरान बच्चों से संबंधित मुद्दों जैसे एंटरप्रेन्योरशिप माइंडसेट, हैप्पीनेस पाठ्यचर्या, देशभक्ति पाठ्यचर्या पर चर्चा की गई।
- चर्चा के दौरान अभिभावकों को विभिन्न योजनाओं से संबंधित कुछ पोस्टर या चित्र वितरित किये गये।
- छात्रों के अधिगम में आई कमी से बाहर निकालवाने में माता- पिता की मदद की गई।
- मेगा पी.टी. एम के द्वारा अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के लिये और बच्चों की शारीरिक व मानसिक आवश्यकताओं के संवेदनशील बनाया गया ।
- माता-पिता के विपरीत विचारों का सम्मान किया गया। यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया गया कि स्कूल के हित व बच्चे के हित हमारे निजी हितों से ऊपर हैं।
- माता-पिता को स्कूल द्वारा किए गए निर्णयों के बारे में चिंता या संदेह होने पर है उनकी चिंताओं को साझा करने का मौका दिया गया व उनके संदेह को दूर करने का प्रयास किया गया ।
- शैक्षणिक मामलों में माता-पिता के साथ बच्चे की उपलब्धि को लेकर पारदर्शिता रखी गई ।
- विद्यालय में आयोजित विभिन्न अन्य कार्यक्रमों की जानकारी माता - पिता को मीटिंग में आमंत्रण के साथ दी गई ।
- अभिभावको के बीच कोविड 19, प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों, नशीली दवाओं, मादक द्रव्यों के सेवन, महिला सुरक्षा और अपने परिवारों के साथ-साथ समाज में महिलाओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार के संबंध में जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया गया।
- माता-पिता के साथ चर्चा किए गए बिंदुओं का रिकॉर्ड रखा गया।

मेगा पी. टी.एम के बाद (After Mega PTM): कायम रखना (Sustain)

- मेगा पी.टी. एम के बाद प्राप्त परिणामों की आपके द्वारा स्कूल मित्रों के साथ मिलकर नियमित रूप से समीक्षा की गई।
- मेगा पी.टी.एम. की रिपोर्ट प्रधानाचार्य से साझा की गई ।
- कार्यशाला और परामर्श सत्रों के माध्यम से माता-पिता के बीच की बाधा को दूर करने के प्रयास किये गये ।
- यह रिकॉर्ड रखा गया कि कितने अभिभावक स्कूल मैंनेजमेंट कमेटी, मध्याह्न भोजन समिति आदि अन्य समितियों का हिस्सा है।
- अभिभावकों से प्राप्त सहयोग के लिये उन्हें सम्मानित करने का प्रयोजन रखा गया।
- व्यक्तिगत रूप से या व्हटसप ग्रुप के माध्यम से अभिभावकों से संपर्क किया गया।
- बच्चों के लिये कोई हेल्पलाइन की शुरूआत की गई।
- माता-पिता द्वारा दिए गये सुझावों को आगे अधिकारियों तक प्रेषित किया गया।
- अभिभावकों के परामर्श के लिये किसी वर्कशाप या सेमिनार की माँग की गई।
- मेगा पी. टी. एम के बाद क्या आपने अनुभव किया कि आपको अभिभावकों से कुछ सीखने का मौका मिला।
- आप अभिभावकों और बच्चों को स्कूल से जोड़ने में समर्थ रहे ।
- आप अभिभावकों को आपस में पारस्परिक रूप से संबंध बनाने के लिये प्रेरित कर पाये।
- मेगा. पी. टी. एम. को सफल बनाने के लिये आप अपने द्वारा किये गये प्रयासों से संतुष्ट हैं।